



संक्षेप

लापता बेटी को खोजने के बदले मां से एसएसआई ने मांगी रिश्तत

बिलासपुर,28 अप्रैल। जनता की रक्षा के लिए पुलिस होती है, लेकिन अगर रक्षक ही भक्षक बन जाए तो उससे क्या ही न्याय की उम्मीद रखी जाए. एक ऐसा ही पुलिस की खाकी वर्दी को शर्मसार करने वाला मामला बिलासपुर जिले से सामने आया है, जहां चार महीने से गुमशुदा बेटी की शिकायत के बाद भी बार-बार पुलिस थाने के चक्कर काट रही है. लेकिन पीड़िता को अब तक उसकी बेटी नहीं मिल सकी है. वहीं, बेटी को खोजने के लिए महिला से रिश्तत मांगने का भी मामला सामने आया है. पीड़िता ने एसएसआई पर 30 हजार रुपये मांगने का आरोप लगाया है, जिसका वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है. जानकारी के अनुसार, कोटा थाना क्षेत्र की रहने वाली एक महिला की नाबालिग बेटी पिछले चार महीने से लापता है. घटना के बाद से पीड़िता लगातार कोटा थाना के चक्कर काट रही थी और पुलिस से बेटी को खोजने की गुहार लगा रही थी. इसी दौरान थाने में पदस्थ एसएसआई हेमंत पाटले ने महिला से कहा कि उनकी बेटी का लोकेशन राजस्थान में मिला है और उसे वापस लाने के लिए भारी खर्च आएगा.एसएसआई हेमंत पाटले ने पीड़िता से बेटी को वापस लाने के लिए 30 हजार रुपये की मांग की, हालांकि महिला ने 20 हजार रुपये दे भी दिए हैं. इस पूरी घटना का वीडियो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिससे पुलिस विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े हो गए हैं. बताया जा रहा है कि लोकेशन मिलने के बाद बेटी को वापस लाने के नाम पर यह रकम ली गई है, जो अब पुलिस महकमे में चर्चा का विषय बन गया है. अब देखने वाली बात होगी कि इस मामले में पुलिस के आला अधिकारी क्या कार्रवाई करते हैं.

ऐसी मांग करूं तो मुझ पर लानत है: उमर

श्रीनगर।पहलगाम आतंकी हमले पर जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने विधानसभा में भावुक भाषण दिया। उन्होंने कहा कि हम मारे गए 26 लोगों के परिजनों के साथ हैं और दिल से हमदर्दी रखते हैं। यही नहीं उन्होंने कहा कि यह मौका नहीं है, जब हम केंद्र सरकार से पूर्ण राज्य के दर्जे की मांग करें। उमर अब्दुल्ला ने कहा कि हम इतनी सस्ती सियासत नहीं करते हैं। उन्होंने कहा कि महाील सही रहे और मेहमानों पर कोई आंच न आए जम्मू-कश्मीर की चुनौी हुई सरकार की यह जिम्मेदारी है। अब्दुल्ला ने कहा, %इस मौके पर मैं जम्मू-कश्मीर के लिए राज्य के दर्जे की मांग नहीं करूंगा। मैं किस मुंह से जम्मू-कश्मीर के लिए राज्य के दर्जे की मांग कर सकता हूं। हम हमेशा राज्य के दर्जे की डिमांड कर रहे, लेकिन आज यदि ऐसी मांग करूं तो मुझ पर लानत है। उन्होंने कहा कि इस मौके पर तो हम एक ही चीज मांगते हैं कि हमले की कड़ी निंदा और मारे गए लोगों के परिजनों से दिल से हमदर्दी। वहीं उन्होंने हमले के बाद स्थानीय लोगों की भूमिका की भी तारीफ की। उमर अब्दुल्ला ने कहा कि होटल वालों ने अपने कमरे छोड़े और कहा कि आप लोग यहां रहिए। ओटो वालों ने कहा कि आपको जहां तक जाना है, हम बिना किसी पैसे को छोड़ेंगे। ऐसी कश्मीरियत को मैं सलाम करता हूं।

भारत का पाकिस्तान पर डिजिटल अटैक 16 यू-ट्यूब चैनल और फेसबुक अकाउंट ब्लॉक

नई दिल्ली,28 अप्रैल। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान को लेकर अपना रुख कड़ा कर लिया है. एक के बाद एक कदमों की कड़ी में भारत ने आईटी नियम, 2021 के तहत आपातकालीन शक्तियों का उपयोग करते हुए दो अलग-अलग आदेशों के जरिए 16 यूट्यूब चैनलों और एक फेसबुक अकाउंट को ब्लॉक किया है. ब्लॉक किए गए सोशल मीडिया अकाउंट में छह पाकिस्तान आधारित और दस भारत आधारित यूट्यूब समाचार चैनल शामिल हैं, जिनकी कुल दर्शक संख्या 68 करोड़ से अधिक है. यह पाया गया कि इन चैनलों का इस्तेमाल राष्ट्रीय

सुरक्षा, भारत के विदेशी संबंधों, देश में सांप्रदायिक सद्भाव और सार्वजनिक व्यवस्था से संबंधित मामलों पर सोशल मीडिया पर फर्जी खबरें फैलाने के लिए किया गया था. किसी भी डिजिटल समाचार प्रकाशक ने आईटी नियम, 2021 के नियम 18 के तहत मंत्रालय को आवश्यक जानकारी नहीं दी थी. भारत स्थित कुछ YouTube चैनलों द्वारा प्रकाशित सामग्री में एक समुदाय को आतंकवादी बताया गया और विभिन्न धार्मिक समुदायों के सदस्यों के बीच नफरत भड़काने की कोशिश की गई. ऐसी सामग्री में सांप्रदायिक विद्वेष पैदा करने और सार्वजनिक व्यवस्था को बिगाड़ने



की क्षमता पाई गई.

भारत स्थित कई YouTube चैनलों को समाज के विभिन्न वर्गों में दहशत पैदा करने की क्षमता वाले अस्थायित समाचार और वीडियो प्रकाशित करते हुए देखा गया. उदाहरणों में COVID-19 के कारण पूरे भारत में लॉकडाउन की घोषणा से संबंधित झूठे दावे शामिल हैं, जिससे प्रवासी श्रमिकों

को खतरा है और कुछ धार्मिक समुदायों को खतरा होने का आरोप लगाते हुए मनगढ़ंत दावे किए गए हैं. ऐसी सामग्री को देश में सार्वजनिक व्यवस्था के लिए हानिकारक पाया गया. पाकिस्तान स्थित यूट्यूब चैनलों का इस्तेमाल समन्वित तरीके से भारत के बारे में विभिन्न वित्तीय सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है

भारत सरकार की डेडलाइन खत्म

नई दिल्ली. जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के साथ सभी कूटनीतिक संबंध तोड़ लिए हैं। साथ ही, सभी पाकिस्तानी नागरिकों को 48 घंटे के भीतर भारत छोड़ने का आदेश जारी किया गया। इस आदेश के बाद पाकिस्तानी नागरिकों में अपने देश लौटने की अफरा-तफरी मच गई, जिसके चलते वाघा-अटारी सीमा पर भारी भीड़ देखी गई। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, देशभर में हजारों पाकिस्तानी नागरिक मौजूद हैं। इनमें से 5,000 से अधिक अकेले दिल्ली में लगभग 2,000 मुंबई और उत्तर प्रदेश में, और 250 उत्तराखंड में हैं। हालांकि, पहली डेडलाइन (27 अप्रैल) खत्म होने तक केवल 537 पाकिस्तानी ही अपने देश लौटे।

3 तलाक देकर दूसरी शादी रचाने वाला गिरफ्तार

दुर्ग,28 अप्रैल। तीन तलाक के एक मामले में दुर्ग पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए आरोपी पति मोहम्मद रईस खोखर को भीपल से गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी को पकड़ने के बाद उसे न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है। पटनाभूपुर थाना पुलिस मामले की आगे जांच कर रही है। जानकारी के अनुसार, कसारीडीह निवासी रेशमा फातिमा ने पटनाभूपुर थाना में शिकायत दर्ज कराई थी। रेशमा ने पुलिस को बताया कि उसका विवाह 16 नवम्बर 2023 को कसारीडीह निवासी मोहम्मद रईस से मुस्लिम रीति-रिवाजों के अनुसार संपन्न हुआ था। विवाह के समय रेशमा की मां ने वर पक्ष को 1,07,786 रुपये नगद, सोना-चांदी के आभूषण और अन्य कीमती सामग्री उपहार स्वरूप



दी थी। निकाह के बाद रेशमा अपने पति के साथ नागपुर, महाराष्ट्र से कसारीडीह आकर रहने लगी थी। लेकिन कुछ ही दिनों में पति का व्यवहार बदल गया और बिना किसी वजह के रेशमा से झगड़े होने लगे। पीड़िता के अनुसार, 18 दिसम्बर 2024 को मोहम्मद रईस ने उसे तीन

बार 'तलाक' बोलकर रिश्ता तोड़ दिया और फिर किसी अन्य युवती से विवाह कर लिया। पीड़िता की रिपोर्ट पर पुलिस ने मुस्लिम विवाह अनुच्छेद की धारा 4 के तहत मामला दर्ज किया। जांच के दौरान पता चला कि आरोपी भीपाल के टीपी नगर इलाके में छिपकर रह रहा था।

खारुन में डूबे दोनों युवकों के शव बरामद

रायपुर,29 अप्रैल। राजधानी रायपुर में खारुन नदी में नहाने के दौरान डूबे दो युवकों से दोनों की बाँड़ी बरामद कर ली गई है। रविवार को शुरू हुए रेस्क्यू अभियान के बाद आज सुबह अर्जुन यादव का



शव SDRF की टीम ने बरामद कर लिया। वहीं, दूसरे युवक भूपेश भूडे की भी लाश बाद में बरामद कर

ली गई। घटना मुजगहन थाना क्षेत्र के काठडीह सात पाखर डैम के पास की है। जानकारी के अनुसार, अर्जुन और भूपेश अपने दोस्तों के साथ संडे का आनंद लेने के लिए डैम पहुंचे थे। नहाने के दौरान अचानक दोनों गहरे पानी में चले गए और डूबने लगे। उनके दोस्तों ने तुरंत सोलिस और राहत टीम को सूचना दी। बताया गया कि अर्जुन यादव नवा रायपुर का निवासी था, जबकि भूपेश भूडे जोरा क्षेत्र का रहने वाला है। घटना के बाद से अर्जुन के परिवार में मातम पसरा हुआ है।

साय व शर्मा ने ली गृह विभाग की बैठक

पाकिस्तानियों-बांग्लादेशियों को करेंगे डिपोर्ट

रायपुर,28 अप्रैल। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के साथ आज उप मुख्यमंत्री एवं गृह मंत्री विजय शर्मा की अहम बैठक होने वाली है. मुख्यमंत्री के निर्देश पर हो रही गृह विभाग की इस बैठक के संबंध में गृह मंत्री विजय शर्मा ने कहा कि अवैध रूप से रह रहे पाकिस्तानी और बांग्लादेशियों के संबंध में चर्चा की जाएगी. छत्तीसगढ़ में अवैध तरीके से रह रहे पाकिस्तानियों और बांग्लादेशियों को बाहर किया जाएगा.

गृह मंत्री विजय शर्मा ने कहा कि पाकिस्तान और बांग्लादेश के बहुत से लोग संदेहास्पद तरीके से रह रहे हैं. उनकी पहचान कर उन्हें डिपोर्ट किया जाएगा. कुछ संदेही पकड़े भी गए हैं. वहीं विजिटर वीजा, लागू मत और मेडिकल वीजा पर पाकिस्तान से आए लोगों के संबंध में चर्चा करने के साथ, केंद्र सरकार के मार्गदर्शन से आगे क्या करना है, तय किया जाएगा. गौरतलब है बीते 22

अप्रैल को पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत सरकार ने पाकिस्तान के खिलाफ बड़ा कूटनीतिक एक्शन लेते हुए भारत में रह रहे पाकिस्तानी

भी पाकिस्तानी नागरिकों की जांच शुरू हो गई है. सूत्रों के अनुसार, छत्तीसगढ़ में करीब 2000 पाकिस्तानी नागरिक मौजूद हैं, जिनमें से लगभग 1800 अकेले रायपुर में रहते हैं. इनमें अधिकांश सिंधी समुदाय से हैं. पुलिस द्वारा वीजा और अन्य दस्तावेजों की गहन जांच की जा रही है. कई मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों से फोन पर बात कर यह सुनिश्चित करने को कहा है कि कोई भी पाकिस्तानी नागरिक तय समय सीमा से अधिक भारत में न रहे. केंद्र सरकार ने स्पष्ट किया है कि हिंदू पाकिस्तानी नागरिकों को जारी दीर्घकालिक वीजा रद्द नहीं किए जाएंगे और उन्हें देश छोड़ने की आवश्यकता नहीं होगी. हालांकि, बिजनेस, मेडिकल या धार्मिक वीजा पर आए लोगों को निर्धारित समयसीमा में भारत छोड़ना अनिवार्य होगा.

भी पाकिस्तानी नागरिकों की जांच शुरू हो गई है. सूत्रों के अनुसार, छत्तीसगढ़ में करीब 2000 पाकिस्तानी नागरिक मौजूद हैं, जिनमें से लगभग 1800 अकेले रायपुर में रहते हैं. इनमें अधिकांश सिंधी समुदाय से हैं. पुलिस द्वारा वीजा और अन्य दस्तावेजों की गहन जांच की जा रही है. कई मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों से फोन पर बात कर यह सुनिश्चित करने को कहा है कि कोई भी पाकिस्तानी नागरिक तय समय सीमा से अधिक भारत में न रहे. केंद्र सरकार ने स्पष्ट किया है कि हिंदू पाकिस्तानी नागरिकों को जारी दीर्घकालिक वीजा रद्द नहीं किए जाएंगे और उन्हें देश छोड़ने की आवश्यकता नहीं होगी. हालांकि, बिजनेस, मेडिकल या धार्मिक वीजा पर आए लोगों को निर्धारित समयसीमा में भारत छोड़ना अनिवार्य होगा.

कूनों में चीतों की संख्या बढ़ी

कूनों। कूनों नेशनल पार्क से वन्यजीव प्रेमियों के लिए एक और खुशी की खबर आई है। यहां मादा चीता नीरवा ने पांच स्वस्थ शावकों को जन्म दिया है। इसके साथ ही पार्क में चीतों की कुल संख्या अब 29 हो गई है। यह उपलब्धि भारत में चीता पुनर्वास योजना की एक बड़ी सफलता मानी जा रही है। कूनों नेशनल पार्क में अफ्रीकी देशों से लाए गए चीतों के प्राकृतिक वातावरण में सफल प्रजनन वन विभाग और विशेषज्ञों की लगातार मेहनत का नतीजा है। हाल ही में पार्क से दो चीतों को मंदसौर के गांधीसागर अभयारण्य शिफ्ट किया गया था, जिससे कूनों में चीतों की संख्या घटकर 24 रह गई थी।



रायपुर। सांसद एवं पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल त्रिपुरा प्रवास के दौरान पावन शक्तिपीठ मातेश्वरी त्रिपुर सुंदरी मंदिर, उदयपुर में माता के दर्शन का किये।

सारनाथ एक्सप्रेस में फर्जी टीटीई पकड़ाया शराब के नशे में यात्रियों से वसूल रहा था किराया

गौरैया-पण्डू-मरवाही,28 अप्रैल। ट्रेनों में आमतौर पर टीटीई को टिकट की जांच करते हुए देखा जाता है। टिकट नहीं होने पर वो यात्रियों से जुर्माना भी वसूलते हैं, लेकिन कई बार कुछ शांति ठग टीटीई की तरह ड्रेस पहनकर लोगों से पैसे वसूलते भी पकड़े गए हैं। रविवार को सारनाथ एक्सप्रेस में यात्रियों की सतर्कता के चलते एक ऐसे ही फर्जी टीटीई को पकड़ा गया। जानकारी के अनुसार, सारनाथ एक्सप्रेस के स्लीपर कोच M1, M2, S1 और S2 में एक युवक टिकट चेक कर रहा था। यात्रियों को उसकी गतिविधियों पर शक हुआ क्योंकि वह व्यवहार में असामान्य लग रहा था और टीटीई की ड्रेस की जगह सिर्फ काला कोट पहने हुए था। एक यात्री ने तुरंत दूसरे कोच के असली टीटीई को इस बारे में सूचित किया।

असली टीटीई ने युवक से पूछताछ की, तो वह नशे में धुत पाया गया और खुद को टीटीई बताने की कोशिश कर रहा था। असली टीटीई ने तुरंत ट्रेन स्टॉप और सुरक्षा बलों को सूचित किया। उसलापुरी स्टेशन पर करने के बाद आरपीएफ और जीआरपीएफ की टीम ने कार्रवाई करते हुए युवक को पेंड्रोड स्टेशन पर पकड़ लिया। गिरफ्तार युवक की पहचान हामिद हुसैन, पिता अहमद हुसैन, निवासी जलेबी चौक, भिलाई पावर हाउस के रूप में हुई। जांच में सामने आया कि वह काले कोट में फर्जी टीटीई बनकर यात्रियों से पैसे वसूल रहा था। पेंड्रोड जीआरपी ने उसके खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 204,205,318 और 319 के तहत अपराध पंजीबद्ध कर न्यायालय में पेश करने के बाद जेल भेज दिया है।

भारत के साथ युद्ध न हो

पीएम शहबाज को भाई नवाज ने दी खास नसीहत

करांची,29 अप्रैल। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) के अध्यक्ष नवाज शरीफ को कश्मीर के पहलगाम इलाके में आतंकवादी हमले के बाद भारत द्वारा सिंधु जल संधि (आईडब्ल्यूटी) को निलंबित करने के मद्देनजर राष्ट्रीय सुरक्षा समिति (एनएससी) द्वारा लिए गए महत्वपूर्ण निर्णयों के बारे में जानकारी दी। रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज ने पंजाब की मुख्यमंत्री मरियम नवाज के साथ जति उमरा में नवाज से उनके पारिवारिक आवास पर मुलाकात की। बैठक के दौरान शहबाज ने अपनी सरकार के रुख को रेखांकित किया और किसी भी आक्रमण का अधिक बल के साथ जवाब देने के लिए पाकिस्तान की तत्परता पर चर्चा की। सूत्रों के अनुसार, शहबाज शरीफ ने पहलगाम आतंकी घटना को क्षेत्र में अस्थिरता पैदा करने के लिए भारतीयों द्वारा किया गया एक और झूठा अभियान बताया। उन्होंने आगे कहा कि भारत द्वारा सिंधु जल संधि को निलंबित

करने के एकतरफा फैसले ने क्षेत्र में युद्ध के जोखिम को बढ़ा दिया है। शांति के लिए पाकिस्तान की प्रतिबद्धता पर जोर देते हुए शहबाज ने कहा कि पाकिस्तान शांति के लिए प्रतिबद्ध है, लेकिन देश की सुरक्षा से कोई समझौता नहीं किया जा सकता। पीएमएल-एन के एक अंदरूनी सूत्र ने खुलासा किया कि नवाज शरीफ ने सरकार को दोनों परमाणु-सशस्त्र देशों के बीच शांति बहाल करने के लिए सभी उपलब्ध राजनयिक संसाधनों का उपयोग करने की सलाह दी। पूर्व पाक पीएम ने कथित तौर पर आक्रामक रुख अपनाने के बारे में संदेह व्यक्त किया, इसके बजाय कूटनीतिक प्रयासों का पक्ष लिया। भारतीय पक्ष में भारतीय सेना उन सभी लोगों को गिरफ्तार कर रही है जो निर्दोष भारतीय नागरिकों को मारने वाले सभी आतंकवादियों से संबंधित हैं। और इस ऑपरेशन में उन्होंने इन स्थानीय आतंकवादियों के घरों को धमाकों से धूल में मिला दिया है और शीघ्र लश्कर कमांडर अल्लाफ लाली को भी मार गिराया है।

बिजली गुल,डॉक्टर ने मोबाइल की रौशनी में कराया प्रसव

जनरेटर की नहीं है सुविधा, सोलर सिस्टम ठग

गरियाबंद,29 अप्रैल। छत्तीसगढ़ में स्वास्थ्य सेवाओं की जमीनी हकीकत एक बार फिर उजागर हुई है। जिले के अमलीपदर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से सामने आई एक तस्वीर ने न केवल सिस्टम पर सवाल खड़े किए हैं, बल्कि यह भी दिखा दिया है कि कैसे राज्य की स्वास्थ्य व्यवस्था अब भी बुनियादी सुविधाओं के लिए जूझ रही है। दो दिन पहले दामरीगुड़ा से आई एक महिला का प्रसव डॉक्टरों और स्टाफ ने मोबाइल की रोशनी में कराया, जिसके बाद अब अस्पताल की स्थिति सवालों के घेरे में आ गई है। प्रभारी चिकित्सक डॉ. इंद्रजीत ने बताया कि उस दिन पहले 8 घंटे तक इलाके की बिजली गुल थी और कम क्षमता के सोलर सिस्टम की बंद हो चुका था, ऐसे में इमरजेंसी की स्थिति को देखते हुए मोबाइल की रोशनी में ही महिला का सफल प्रसव कराया गया। उन्होंने यह भी बताया कि 5 घंटे से ज्यादा बिजली गुल रही तो अस्पताल में ब्लैकाउट निर्मित हो जाता है। बता दें कि

2022 में अमलीपदर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को उन्नयन कर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बना दिया गया था, लेकिन अब तक इसे आवश्यक सुविधाएं नहीं दी गईं। अस्पताल में न तो जनरेटर है और न ही कोई वैकल्पिक बिजली व्यवस्था, जिससे इलाज में कठिनाई आती है। यहां के 40 से अधिक गांवों की करीब 80,000 आबादी इस अस्पताल पर निर्भर है, लेकिन अस्पताल में न तो 102 एम्बुलेंस सेवा है, न प्रसव कक्ष और इमरजेंसी कोच में बिजली की वैकल्पिक व्यवस्था। अस्पताल में पर्याप्त स्टॉफ की भी कमी है, जिसके चलते सुविधा के अभाव में यहां के ग्रामीणों को झोला छाप डॉक्टरों और निजी क्लीनिकों का सहारा लेना पड़ता है। अस्पताल की अन्य बुनियादी सुविधाएं, जैसे कि बाइंड्री वॉल, सीसीटीवी कैमरे और स्टॉफ की पर्याप्त संख्या भी नहीं है। इस कारण न सिर्फ अस्पताल में मिलने वाली सेवाओं की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है, बल्कि सुरक्षा पर भी सवाल खड़ा होता है।

उपमुख्यमंत्री ने बॉडीबिल्डिंग व वेटलिफ्टिंग स्पर्धा के विजेताओं को किया सम्मानित



■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

कवर्धा, 28 अप्रैल। उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने आज नेपाल के पोखरा शहर में आयोजित अंतरराष्ट्रीय बॉडीबिल्डिंग और वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए भारत का परचम बुलंद करने वाले कबीरधाम जिले के खिलाड़ियों से सौजन्य भेंट मुलाकात की। उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने सभी विजेता खिलाड़ियों को पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए हार्दिक बधाई दी।

उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि जिले के सूरज राजपूत ने बॉडीबिल्डिंग प्रतियोगिता में सात देशों के प्रतिभागियों को पछाड़ते हुए इंटरनेशनल मिस्टर ओवरऑल का खिताब अपने नाम किया। कवर्धा की पहली महिला वेटलिफ्टर दीपाली सोनी ने 76 किलोग्राम वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर जिले का मान बढ़ाया है। पुरुषों के 67 किलोग्राम वर्ग में सब-जूनियर श्रेणी के अभिषेक तिवारी ने वेटलिफ्टिंग में स्वर्ण पदक हासिल किया। वहीं 14 वर्षीय अनुराग जांगड़े ने 109 किलोग्राम वर्ग में सब-जूनियर

वेटलिफ्टिंग में स्वर्ण पदक जीतकर भविष्य की एक बड़ी उम्मीद बनकर उभरे हैं। इन युवाओं की मेहनत, समर्पण और लगन आज हम सबके लिए प्रेरणास्रोत हैं। इनकी उपलब्धि से न सिर्फ हमारा जिला, बल्कि पूरे प्रदेश और देश का नाम रोशन हुआ है। इस अवसर पर पूर्व विधायक मोतीराम चंद्रवंशी, जिला पंचायत सदस्य डॉ बीरेन्द्र साहू, लोकचंद साहू, श्री विजय पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि भुखन साहू, पार्षद डीनेश राजपूत, श्री दीपक सिंह सहित जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

एक नजर

ठगी के आरोपी गिरफ्तार



भिलाई, 28 अप्रैल (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। छत्तीसगढ़ बीज निगम एवं पुलिस विभाग में नौकरी लगाने के नाम पर 5 लाख रुपए लेकर धोखाधड़ी करने वाले दो आरोपियों को भिलाई नगर थाने पुलिस ने गिरफ्तार किया है आरोपियों के कब्जे से घटना में प्रयुक्त एक लैपटॉप जब्त किया है भिलाई नगर टीआई प्रशांत मिश्रा ने बताया कि डांगेश्वर कुमार बघेल (32 साल) निवासी सेक्टर - 5 ने 27 अप्रैल को थाना भिलाई नगर में रिपोर्ट दर्ज कराया कि समाजिक गतिविधियों में जाने के दौरान सुमीत गायकवाड़ एवं दीपक गायकवाड़ से जान पहचान हुई अप्रैल 2022 मे सुमीत गायकवाड़ एवं दीपक गायकवाड़ ने प्रार्थी से परिचय बढ़ाकर उसे विश्वास में लेकर प्रार्थी की बहनों को छत्तीसगढ़ बीज निगम में नौकरी लगाने के नाम पर 3 लाख रुपए लिया उन लोग को नौकरी नहीं लगा पाने के बाद प्रार्थी को छत्तीसगढ़ पुलिस में एसआई के पद पर सीधी भर्ती कराने का झांसा देकर पहले लिये गए 03 लाख रकम एवं उसके बाद 02 लाख रुपये और लेकर कुल 5 लाख रुपये लेकर धोखाधड़ी की। रिपोर्ट पर पुलिस मामले में धारा 318 (4), 338, 336(3), 340(2), 3(5) बीएनएस कायम किया जाकर विवेचना में लिया गया प्रकरण की विवेचना के दौरान सुमीत कुमार गायकवाड़ मरोदा सेक्टर व दीपक गायकवाड़ मरोदा सेक्टर को हिरासत में लेकर पूछताछ की दोनों ने जुर्म स्वीकार किया।

नशामुक्त अभियान जगरण के लिए आवश्यक : मुकेश सेन

कवर्धा, 28 अप्रैल (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। सुबह से ही युवाओं में गुटखा खाने और शराब पीने की आदत लगातार बढ़ती जा रही है जो की चिंताजनक है और भविष्य में कहीं युवाओं को कैसर या लीवर की बीमारी हो सकती है। परिवार भी परेशान रहते है यदि किसी घर में एक युवा सुबह से शराब पीता रहता है तो परिवार को बहुत परेशानी होती है। मुकेश सेन नशा मुक्ति संयोजक सेन संगवारी सामाजिक उत्थान मंच ने कहा की सभी समाज को नशा मुक्त अभियान के लिए आगे आना होगा क्योंकि गरीब और मध्यमवर्गीय परिवार में नशा जैसी आदतें जो बढ़ रही है जिससे आर्थिक समस्या और अपराध होने की संभावना बढ़ जाती है और कई परिवार समस्या को कहीं बता नहीं पाते लेकिन अब शायद समय आ गया की नशा मुक्ति अभियान जैसे कार्यक्रम में सभी जनप्रतिनिधियों और शिक्षाविदों और सामाजिक संस्थाओं को शामिल होना चाहिए। या कुछ महीनों के लिए नशा युक्त पेय और पदार्थों पर प्रतिबंध लाना चाहिए। अपनी बात को बढ़ाते हुए मुकेश सेन ने कहा की गुटखा ज्यादा खाने से कैसर की संभावना बढ़ जाती है और शराब ज्यादा पीने से लिवर खराब और बहुत सारी खतरनाक बीमारी की संभावना बढ़ जाती है। सभी लोगों से मुकेश सेन ने नशा जैसी कुतियों से दूर रहने की विनम्र अपील की। युवा नशा को छोड़कर शिक्षा पर ध्यान दे।

अवैध शराब तस्करी में सलिम पांच आरोपी चढे पुलिस के हत्थे

199 पौवा देशी शराब व तीन बाइक जब्त

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

कवर्धा, 28 अप्रैल। जिला कबीरधाम में अवैध सट्टा, जुआ और शराब के विरुद्ध सख्त अभियान चलाने के निर्देश पुलिस अधीक्षक धर्मेन्द्र सिंह द्वारा सभी थाना प्रभारियों को दिए गए हैं। इसी क्रम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पुष्पेन्द्र बघेल एवं जिला अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पंकज पटेल तथा अनुविभागीय अधिकारी (पुलिस) पंडरिया भूपत सिंह धनेश्री के मार्गदर्शन में, थाना प्रभारी कुंडा निरीक्षक महेश प्रधान के नेतृत्व में 25 अप्रैल 2025 को मुखर्बिर से प्राप्त सूचना के आधार पर पुलिस की अलग-अलग टीमों द्वारा ग्राम सन्तभाठा (पानी टंकी के पास), ग्राम पेंड्रीकला (हाफनदी पुल के पास) एवं सतनामी पारा कुण्डा (माकरी रोड, तालाब के पास) में घेराबंदी कर त्वरित रेड कार्रवाई की गई। प्रथम प्रकरण में आरोपी महेन्द्र दिवाकर (पिता डू राजकुमार दिवाकर, उम्र डू 24 वर्ष, निवासी सारंगपुर, थाना फ़स्टरपुर, जिला मुंगेली) एवं डोमेश चेस्कर (पिता डू पुरन दास, उम्र डू 24 वर्ष, निवासी बोदा, थाना फ़स्टरपुर, जिला मुंगेली) के संयुक्त कब्जे से कुल 72 पौवा देशी प्लेन मदिरा (प्रत्येक में 180 मिली लीटर, कुल 12.960 बल्क लीटर, अनुमानित कीमत ₹75760) बरामद की गई। इनके पास से एक पुरानी इस्तेमाल की गई मोटर सायकल (होंडा सीडी 110, क्रमांक छत 28 रू 6029, कीमत ₹45,000) भी जब्त की गई। कुल बरामदगी ₹50,760 मूल्य की रही। द्वितीय प्रकरण में आरोपी भोला चैतराम बंजारे (पिता डू गुनारी बंजारे,



उम्र डू 61 वर्ष) एवं गौरव बंजारे (पिता डू मोहन बंजारे, उम्र डू 23 वर्ष), दोनों निवासी सोमनापुर, चौकी दामापुर, थाना कुंडा, जिला कबीरधाम, के कब्जे से कुल 77 पौवा देशी प्लेन मदिरा (प्रत्येक में 180 मिली लीटर, कुल 13.860 बल्क लीटर, अनुमानित कीमत ₹6160) तथा एक पुरानी मोटर सायकल (पेंशन प्रो, बिना नंबर, काला रंग, अनुमानित कीमत ₹40,000) बरामद की गई।

कुल जब्त की कीमत ₹46,160 मूल्य की रही। द्वितीय प्रकरण में आरोपी भोला चैतराम बंजारे (पिता डू नकुल साहू, उम्र डू 30

वर्ष, निवासी कुआमालगी, चौकी दामापुर, थाना कुंडा) के कब्जे से 50 पौवा देशी प्लेन मदिरा (प्रत्येक में 180 मिली लीटर, कुल 9.00 बल्क लीटर, कीमत ₹24000) एवं एक पुरानी मोटर सायकल (बजाज सीटी 100, क्रमांक छत 09 छर्र 6199, लाल रंग, कीमत ₹50,000) जब्त की गई।

इस मामले में कुल बरामदगी ₹54,000 रही। इस प्रकार तीन अलग-अलग मामलों में कुल पांच व्यक्तियों से 199 पौवा देशी प्लेन मदिरा और तीन मोटर सायकल जब्त की गईं।

गांजा बेचते दो आरोपियों को पुलिस ने पकड़ा



भिलाई, 28 अप्रैल (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। कुम्हारी पुलिस ने दो अलग-अलग कार्रवाई में दो गांजा बेचने वाले महिला व पुरुष को पकड़ा। दोनों के पास से कुल दो किलो 355 ग्राम गांजा व 97,500 रुपए बिक्री रकम जब्त किया है छवनी सीएसपी हरीश पाटिल ने बताया कि मुखबीर से अवैध गांजा बिक्री करने की सूचना मिलने पर पुलिस घटनास्थल रूपनगर वार्ड नंबर 15 सार्वजनिक शौचालय के पास पहुंचकर आरोपी महिला शांति बाई (65 वर्ष) रूपनगर कुम्हारी वार्ड क्रं 15 के कब्जे से गांजा वजनो 01 किलो 120 ग्राम, बिक्री रकम 3000 रुपए जब्त किया गया। इसी तरह से रूपनगर वार्ड नंबर 15 सार्वजनिक शौचालय के पास आरोपी महेश जगत (69 वर्ष) निवासी रूपनगर वार्ड क्रं 15, थाना कुम्हारी जिला दुर्ग छा. के कब्जे से गांजा वजनो 01 किलो 235 ग्राम, बिक्री रकम 94,500 रुपए एवं गांजा कीमती 4000 रूपये जुमला कीमती 98500 रुपए जब्त किया है।

सुपेला संडे बाजार में सड़क पर व्यापार करने वालों पर निगम ने की कार्रवाई



■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

भिलाई, 28 अप्रैल । नगर निगम ने सुपेला संडे बाजार में सड़क पर व्यापार करने वालों पर कार्रवाई की। एक दिन पहले ही सभी को चेता दिया गया था कि कोई भी सड़क के ऊपर बैटकर सामानों का बिक्री नहीं करेगा। फिर भी पुरकर व्यापारी पसारा लगाने वाले, फेरी वाले, कपड़ा बेचने, फल बेचने, जूता चपल आदि सामान बेचने वाले सड़क के ऊपर फैला करके बिक्री कर रहे थे। नगर निगम की टीम वहां पहुंची तो कुछ लोग भाग गए। जो पकड़ में आए उनसे 5600 का चालान काटा गया। उन्हें समझाइस दी गई की सभी को अपने हद में रहें। जितना उनको मार्किंग करके दिया गया है उतने में ही व्यापार करें। नगर निगम भिलाई लगातार कार्रवाई कर रही है। इसके लिए जन जन प्रतिनिधि भी सहयोग कर रहे हैं। वहां की हालत ऐसी हो जाती है कि अगर दिन में एंबुलेंस या फायर ब्रिगेड लेकर के जाना पड़ जाए तो नहीं गुजर सकते हैं। प्रमुख रूप से व्यापारियों पर कार्रवाई की गई मोनू आहता सेंटर, सीताराम आहता सेंटर, जानकी साहू किराना स्टोर, नमाज कपड़ा, साजिद भाई गारमेंट, किस फल ठेला, अब्दुल, दुर्गा फल ठेला, सरस्वती दोसा सेंटर, मामा भांजा, सूर्यास्त दोसा सेंटर, देवराज नाश्ता हॉटल, सुमित कुमार, फल सेंटर, सोनू चौहान फल सेंटर, से सिंगल युज प्लास्टिक प्लास्टिक का उपयोग करना एवं सड़क बाधा शुल्क ले करके रसीद दिया गया। कार्रवाई के दौरान स्वच्छता निरीक्षक कमलेश द्विवेदी, अंजनी सिंह, तोड्डपेड़ प्रभारी हरिओम गुप्ता, मंगल जांगड़े, विष्णु सोनी, गवकरण कुरें, संजय गायकवाड़, राजेंद्र सिंह, दिनेश, पिंटू, दीपक सम्मिलित हुए।

सियान सदन का संसद विजय बघेल ने किया लोकार्पण

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

भिलाई, 28 अप्रैल । पूर्व विधायक स्वर्गीय विद्यारतन भसीन के विधायक निधि से निर्मित सियान सदन वार्ड क्रमांक 30 प्रांगित नगर कैप 1 में लोकार्पण दुर्ग सांसद विजय बघेल द्वारा लोकार्पण किया गया। इससे इस क्षेत्र के रहने वाले वरिष्ठ नागरिकों में हर्ष का माहौल है। 65 वर्षीय वरिष्ठ नागरिक रामकुमार वर्मा एवं राजकुमार साहू ने बताया कि हम लोगों की बड़ी अभिलाषा थी कि यहाँ सयान सदन बने जहां पर हम लोग बैठकर अपना दुख तकलीफ आपस में साझा करें। यह मांग जब हम लोग स्वर्गीय भसीन से किए थे उन्होंने कहा था हम पूरा करेंगे। वहां उपस्थित 35 वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान शाल श्रीफ्त के साथ किया गया। सांसद विजय बघेल ने कहा स्वर्गीय विद्यारतन भसीन के विधायक निधि से निर्मित तीसरा सयान सदन



का उद्घाटन कर रहा हूं। मुझे बहुत खुशी होती है जब कोई उनका नाम लेता है। कार्यक्रम के दौरान नेता प्रतिपक्ष भोजराज सिन्हा, जोन अध्यक्ष जालधर सिंह, वार्ड पार्षद सत्या देवी जयसवाल, संतोष मौर्या, स्वर्गीय विद्या रत्न भशीन की पुत्री दिव्या भसीन, छत्तीसगढ़ चेंबर ऑफ कॉमर्स से अजय भसीन, भिलाई महिला मोर्चा अध्यक्ष स्वीटी कौशिक, सांसद प्रतिनिधि प्रमोद सिंह, नगर निगम अभियंता संजय अग्रवाल, नितेश मेश्राम, अर्पित बंजारे, जोन स्वास्थ्य अधिकारी वीरेंद्र बंजारे, जनप्रतिनिधि राजकुमार जायसवाल, प्रभु नाथ मिश्रा, धर्मेन्द्र दिवाकर, धनराजू, भोला साहू, अशोक कुमार, पप्पू यादव, राजमणि दुबे, टाट पट्टी सेवा संच के पदाधिकारी, स्थानीय नागरिकाण अच्युतानंद पांडे, राकेश अग्रवाल, मुन्ना मौर्या, अभिषेक मिश्रा, आदि उपस्थित रहे। जनसंपर्क विभाग, नगर पाली निगम, भिलाई।

समाचार संक्षेप

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विवि ने बच्चों को बांटे पौधे

पर्यावरण जागरूकता का दिया गया संदेश



■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

भिलाई, 28 अप्रैल। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा सेक्टर 7 स्थित राजयोग भवन में आयोजित डिवाइन रूप की साप्ताहिक कक्षा में विशेष पहल देखने को मिली। हर रविवार प्रातः 8 से 10 बजे तक संचालित होने वाली इस कक्षा में आज सभी बच्चों को पौधे वितरित किए गए।

कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल बच्चों को राजयोग मेंडिटेशन और नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करना था, बल्कि उन्हें पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी जागरूक बनाना रहा। पौधे वितरित करते हुए उपस्थित ब्रह्माकुमारी पूजा दीदी, गायत्री दीदी ने बच्चों को संदेश दिया कि जिस

प्रकार हम प्रेम से पौधों की सेवा करते हैं, उसी प्रकार हमें प्रकृति और समाज के प्रति भी अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। आपने बच्चों को बताया कि यदि आप प्रेम, शांति बड़ों के प्रति आदर और मधुरता आदि गुणों को अपने व्यवहार में लाएंगे तो प्रकृति सदा आपकी सहयोगी रहेगी। बच्चों को विशेष होमवर्क दिया गया की अपने से छोटे और बड़ों की, पशु पक्षियों की और आप सभी को दिए गए।

पौधों की (समय पर पानी देकर) प्रेम से आत्मिक पालना करनी है। ज्ञात हो कि प्रत्येक रविवार क्लास 4 से क्लास 9 तक के बच्चों के लिए आयोजित यह डिवाइन रूप की क्लास विगत 20 वर्षों से भी अधिक समय से अनवरत सफलता पूर्वक चल रहा है।

कार पोल से टकराई, युवक-युवती की मौत



■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

दुर्ग, 29 अप्रैल। दुर्ग जिले के भिलाई में भीषण सड़क हादसे में 2 लोगों की मौत हो गई। आज तड़के 3 से 4 बजे के बीच एक युवक अपनी गलफेंड को लेकर कार में घूमने निकला था।

बताया जा रहा है कि तेज रफ्तार सड़क के बीच लगे पोल से जा टकराई। टक्कर इतनी तेज थी कि कार के परखच्चे उड़ गये। वहीं कार में सवार युवक-युवती ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। जानकारी के मुताबिक सड़क दुर्घटना का ये मामला स्मृति नगर चौकी क्षेत्र का है। बताया जा रहा है कि अर्न्तीबाई चौक से कुरुद जाने वाली सड़क मार्ग पर में ये हादसा हुआ। दुर्घटना में मृत दोनों युवक-युवती की पहचान नंदिनी रोड छवनी निवासी आलोक साहू और भिलाई नगर निवासी पूजा प्रसाद के रूप में पुलिस ने की है। बताया जा रहा है कि आज तड़के आलोक साहू अपनी गलफेंड पूजा प्रसाद के साथ कार में घूमने निकले थे। आलोक कार चला रहा था। बगल की सीट में पूजा बैठी

थी। तेज रफ्तार कार कुरुद से मौल रोड की तरफ जा रही थी। जैसे ही वे लोग अर्न्तीबाई चौक से कुरुद जाने वाली रोड की तरफ मुड़े, तभी तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर सड़क के बीच में लगे पोल से जा टकराई। इस भीषण हादसे में कार के सामने का हिस्सा पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। बताया जा रहा है कि कार की टक्कर इतनी तेज थी कि इसमें सवार दोनों की मौके पर ही मौत हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों ने मामले की सूचना डायल 112 को दी। इसके बाद स्मृति नगर चौकी पुलिस मौके पर पहुंची।

पुलिस ने बुरी तरह से घायल युवक-युवती को तत्काल लाल बहादुर शास्त्री अस्पताल सुपेला भिजवाया। जहां परीक्षण के बाद डॉक्टर ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने इस घटना पर मर्मा कायम कर शव को पोस्टमार्टम के लिए मरचूरी में रखवा दिया है। कुछ देर बाद दोनों का पोस्टमॉर्टम होने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया जायेगा। उधर इस घटना की जानकारी के बाद से दोनों मृतकों के परिवार में मातम व्याप्त है।

राइस मिल में भीषण आग, लाखों का बारदाना जलकर खाक



■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

दुर्ग, 29 अप्रैल। चंद्रखुरी स्थित भवानी राइस मिल में लगी आग ने इलाके में हड़कंप मचा दिया। आग मिल के बारदाना गोदाम में लगी थी, जिसमें लाखों रुपए का बारदाना जलकर खाक हो गया। आग की भयानकता का आदशा इसी से लगाया जा सकता है कि धुएं का गुबार दूर-दूर तक दिखाई दे रहा था। सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची और दमकल कर्मियों ने दो घंटे की कड़ी मशकत के बाद आग पर काबू पाया। पूरी घटना रविवार रात करीब 10-30 बजे की है, भवानी राइस मिल के बारदाना गोदाम में आग लग गई। आग ने देखते ही देखते विकराल रूप ले लिया। आग बढ़ते देख मिल के सुपरवाइजर



ने तुरंत जिला अग्निशमन विभाग को सूचना दी। मौके पर पहुंचे दमकल विभाग के चार वाहनों और 20 से अधिक जवानों ने दो घंटे की कड़ी मशकत के बाद आग पर काबू पाया। फिलहाल राइस मिल में आग लगने के कारणों का पता नहीं चल सका है। पुलिस और दमकल विभाग की टीम मामले की जांच में जुटी हुई है। पुलगांव थाना पुलिस पूरे घटनाक्रम की जांच कर रही है।

इंदौरी में पानी की समस्या के समाधान के लिए

पंडरिया विधायक भावना ने दी पानी टैंकर की सौगात , नागरिकों में हर्ष



■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

कवर्धा, 28 अप्रैल। पंडरिया विधानसभा के उत्कृष्ट विधायक भावना बोहरा जी के द्वारा नगर पंचायत इंदौरी में पानी की समस्या को अध्यक्ष पार्षद व क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों के मांग पर नगर पंचायत इंदौरी में पानी टैंकर

का सौगात दिया गया पानी टैंकर का उद्घाटन नगर पंचायत इंदौरी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष मिर्ज़ीन बाई माहणी लाल माहले के द्वारा सभी पार्षदों एवं क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों के उपस्थिति में किया गया। वरिष्ठ बीजेपी नेता सीताराम साहू ने बताया की पंडरिया विधायक भावना दीदी के मार्गदर्शन में इंदौरी

नगर पंचायत विकास की दिशा में अग्रसर है और स्वच्छता और पेयजल के साथ साथ विकास कार्य पर विशेष फोकस रखे हुए है और इंदौरी नगर पंचायत को पानी टैंकर मिला है जिसके लिए सभी जनप्रतिनिधि और इंदौरी वासी भावना दीदी को आधार व्यक्त करते है ।

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

भिलाई, 28 अप्रैल। इंदिरा गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय वैशाली नगर के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के द्वारा इस तपती गर्मी को देखते हुए पक्षियों के जल की व्यवस्था की गई। जिसके लिए राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने मिट्टी के बर्तन लेकर उसे महाविद्यालय में स्थित कई पेड़ों में लटकाया एवं उसमें प्रतिदिन जल भरने की प्रक्रिया प्रारंभ की जिससे पक्षियों को जल एवं विश्राम की व्यवस्था सुहृदा कई जा सके छ इस अभियान में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ अलका मेश्राम ने अपने हाथों से पेड़ में जल पात्र लगाकर अपना सहयोग प्रदान किया, साथ ही साथ उन्होंने विद्यार्थियों के इस कार्य की प्रशंसा की,



यह कार्यक्रम राष्ट्रीय सेवा योजना की कार्यक्रम अधिकारी डॉ चान्दनी मरकाम के नेतृत्व में संपन्न कराया गया। इस कार्य में महाविद्यालय के लगभग सभी प्राध्यापक उपस्थित रहे जिसमें डॉ कैलाश शर्मा, डॉ एस के दास, डॉ किरण रामटेक, सुशीला शर्मा, कौशलया शास्त्री, प्रो सुरेश कुमार

ठाकुर, प्रो अमृतेष शुक्ला, प्रो अत्रिका कोमा, प्रोफेसर संतोष अग्रवाल, प्रो सिम्मी गहलोत के साथ राष्ट्रीय सेवा योजना के दलनिधिका कुमारी पलक सिंह राजपूत एवं स्वयंसेविका गायत्री सिक्का, सुमन, काजल साव, निकिता एवं अन्य स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

वाणिज्य विषय के प्रति बच्चों की रुचि बढ़ाने कार्यशाला का हुआ आयोजन

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

राजनांदगांव 28 अप्रैल। शिक्षा विभाग द्वारा स्कूली बच्चों में वाणिज्य विषय के प्रति बच्चों में रुचि बढ़ाने एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में वाणिज्य विषय की भूमिका सहित अन्य वाणिज्य से जुड़े विषयों पर जिले के सभी वाणिज्य संकाय के व्याख्याताओं के लिए डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बसंतपुर राजनांदगांव के ऑडिटोरियम में कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिला शिक्षा अधिकारी प्रवास सिंह बघेल ने बताया कि जिले में बच्चों द्वारा लिया जाने वाला दूसरा सबसे महत्वपूर्ण विषय वाणिज्य संकाय है। राज्य व जिले में प्रावीण्य सूची में स्थान पाने वाले ज्यादातर बच्चे



कॉमर्स संकाय से होते हैं। जिला शिक्षा अधिकारी ने कहा कि स्कूली शिक्षा के बाद बच्चों को आगे की पढ़ाई, वाणिज्य विषय से संबंधित प्रतियोगी परीक्षाएं एवं वाणिज्य विषय में कैरियर ऑप्शन के बारे में आवश्यक मार्गदर्शन देने की आवश्यकता है। उन्होंने बच्चों को

वाणिज्य विषय को लेकर रुचि बढ़ाने तथा रुचिकर तरीके से बच्चों को वाणिज्य विषय की जानकारी देने कहा। जिला शिक्षा अधिकारी ने अधिक से अधिक बच्चों को व्यवसायिक शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ाने, जीवन में वाणिज्य विषय की उपयोगिता के संबंध में

जानकारी तथा आवश्यक मार्गदर्शन देने कहा। उन्होंने कहा कि किसी भी स्थिति में बच्चों एवं शिक्षकों में नकारात्मकता हावी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने वाणिज्य विषय के शिक्षकों को विषय से संबंधित नवीन जानकारी से अपडेट रहने के निर्देश दिए, ताकि बच्चों को विषय

की बारीकियों की जानकारी दी जा सके।

कार्यक्रम में काउंसलर्स राकेश ठाकुर एवं राकेश शर्मा द्वारा वाणिज्य विषय के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि वित्तीय क्षेत्र में वाणिज्य संकाय के बच्चे बेहतर और अच्छे भविष्य बना सकते हैं।

उन्होंने बताया कि देश में जीएसटी कार्डसिल के रूप में वित्तीय संस्थाएं प्रारंभ की गई हैं, जिसमें बड़े पैमाने पर कर्मशियल बैंकग्राउंड वाले बच्चों की आवश्यकता है।

इस दौरान उन्होंने स्टॉक मार्केट के क्षेत्र में बेहतर कैरियर के बारे में बताया। कार्यशाला में व्याख्याताओं ने अपने विचार व्यक्त किए तथा उनकी जिज्ञासाओं का समाधान भी किया गया। कार्यशाला में सहायक संचालक शिक्षा आदित्य खरे, डीएमसी समग्र शिक्षा सतीश ब्योहरे, एपीसी समग्र शिक्षा मनोज मरकाम, बीईओ डोंगराढ़ विरेंद्र कौर रचरा, बीईओ छुरिया प्रशांत चितवरकर एवं एबीईओ राजनांदगांव शैलेंद्र रूसिया सहित बड़ी संख्या में वाणिज्य संकाय के व्याख्याता उपस्थित थे।

विधायक राजेश मूणत ने मीडिया सिटी में सामुदायिक भवन का किया लोकार्पण



- विकास कार्य के लिए विधायक निधि से 25 लाख रुपए देने की घोषणा की
- नवनिर्मित सामुदायिक भवन का किया लोकार्पण

रायपुर, 28 अप्रैल। रायपुर पश्चिम के विधायक व राजेश मूणत ने आज मीडिया सिटी में विकास कार्य के लिए विधायक निधि से 25 लाख देने की घोषणा की। वहीं महापौर श्रीमती मीनल चौबे ने शिवालय परिसर में नया ओपन जिम लगाने की बात कही। कार्यक्रम में मीडिया सिटी के वरिष्ठ पत्रकार व पार्षदराण उपस्थित थे।

मीडिया सिटी में नवनिर्मित सामुदायिक भवन का लोकार्पण रायपुर पश्चिम के विधायक श्री राजेश मूणत ने किया। इस भवन का शिलान्यास भी श्री मूणत ने ही किया था।

उन्होंने कहा कि मीडिया सिटी मेरा परिवार है, यहाँ जब भी मेरे सहयोग की जरूरत पड़ेगी, मैं साथ खड़ा हूँगा। उन्होंने मीडिया सिटी के अध्यक्ष श्री प्रेम पाठक द्वारा

सामुदायिक भवन का विस्तार करते हुए प्रथम तल पर 3 कमरे बनाने की माँग करने पर 25 लाख रुपए देने की घोषणा की, जिसमें 5 लाख रुपए शिवालय मंदिर के फाल सीलिंग एवं रंग रोशन के लिए दिए । वहीं 5 लाख रुपए मंदिर परिसर स्थित गार्डन में पेवर टाइल्ज हेतु 5 लाख रुपए और सामुदायिक भवन में कमरों के निर्माण और पेवर टाइल्ज हेतु 15 लाख देने की घोषणा की। महापौर मीनल चौबे ने कहा कि हमने बनाया है-हम ही सवारों। मीडिया सिटी की बसाहट व यहाँ के रहवासियों की तारीफ करते हुए उन्होंने हर संभव सहयोग की बात कही। उन्होंने रायपुर शहर को स्वच्छ, सुन्दर, विकसित करने के कार्यों में मीडिया परिवार के सदस्यों से सहयोग मांगा।

नगर निगम के सभापति सूर्यकांत राठौर ने भी लोकार्पण अवसर पर अपनी शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर श्री राजेश मूणत के जन्मदिन की पूर्व संस्था पर मीडिया सिटी के सदस्यों ने केक काटकर उनका जन्मदिन मनाया। कार्यक्रम में मीडिया सिटी के सदस्य श्री भोला राम सिन्हा को चंदूलाल चंद्रकर स्मृति राज्य अलंकरण पुरस्कार पाने पर सम्मानित किया गया।

धर्मनगरी में विहिप, बजरंग दल की नवीन कार्यकारणी का हुआ गठन



डोंगराढ़, 28 अप्रैल। धर्मनगरी डोंगराढ़ में विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के कार्यकर्ताओ की बैठक डोंगराढ़ प्रखंड के दायित्व नियोजन व नवीन कार्यकारणी की टोली बनाने हेतु महावीर मंदिर प्रांगण में बैठक सम्पन्न हुई बैठक में सर्वप्रथम हनुमान चालीसा का पाठ ततपश्चात आचार्य पद्धति से श्री राम विजय महामंत्र से शुरुआत हुई बैठक में मुख्य रूप से विश्व हिंदू परिषद के प्रांत के सहमंत्री नंदु राम साहू जी,जिला कार्यकारी अध्यक्ष तरुण हथेल जी,जिला समाजिक समरस्ता प्रमुख बाबा जी,बजरंगा दल जिला सहसंयोजक हनी गुप्ता उपस्थिति रहे नगर की विहिप बजरंग दल की टोली का गठन

किया गया। नगर की कार्यकारिणी टोली में लिया गया इन सभी दायित्वो की घोषणा विहिप के प्रांत सहमंत्री नंदुराम साहू जी द्वारा की गई व संघटन के रीति नीति से अवगत कराया गया साथ ही आगामी विहिप व बजरंग दल के प्रशिक्षण वर्गों की सूचना दी गयी। तरुण हथेल विहिप कार्यकारी अध्यक्ष ने कहा अब समय है हिंदुओ को सफाई होकर एन केक हर क्षेत्र में कार्य करने की आवश्यक हो चाहे सामाजिक या धर्मिक जैसा भी कार्य हो साथ ही शस्त्र व शास्त्र दोनो रखना महत्वपूर्ण है नवीन दायित्वान कार्यकर्ताओं को अपन दायित्व का बोध होना जरूरी व सभी को आगामी वर्ग में प्रशिक्षण लेने चाहिये ऐसी बात कही।

अटल डिजिटल सुविधा केंद्र से आम नागरिकों को मिलेगी बेहतर सुविधाएं: संजय सिन्हा



छुरिया, 28 अप्रैल। छुरिया विकास खंड के ग्रामपंचायत कुहिकला में छुरिया जनपद पंचायत के अध्यक्ष संजय कुमार सिन्हा ने अटल डिजीटल सुविधा केंद्र सी एस सी सेंटर भवन निर्माण कार्य शुरू करने से पहले भूमिपूजन संपन्न किया गया । सर्वप्रथम मां छत्तीसगढ़ महतारी के तैल चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया । उपस्थित जनों व ग्रामपंचायत के प्रतिनिधियों ने श्री सिन्हा व कार्यक्रम के अध्यक्षता कर रहे श्रीमती बीरम बाई मंडवी सदस्य जिला पंचायत सहित उपस्थित अन्य वरिष्ठ जनों का भी फूल माला से स्वागत किया गया । कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री सिन्हा ने कहा कि पंचायती राज दिवस के दिन छुरिया विकासखंड के दस ग्राम पंचायतों में अटल डिजीटल सुविधा केंद्र का औपचारिक उद्घाटन किया गया। इससे मिलने वाले सुविधा से

भी आमजनों को अवगत कराया गया,आगे उन्होंने बताया कि हमारे विकासखंड के ये पहला पंचायत होगा जहां शासन द्वारा इसके लिए 5 लाख की स्वीकृति प्रदान किया गया है,साथ ही सहायक उपकरण खरीदी के लिए एक लाख रुपए की राशि आवंटित किया गया है,जिसका आज भूमिपूजन किया गया है,जल्द भवन तैयार हो जाएगा और आम नागरिकों को सुविधा मिलने लगेगी,कार्यक्रम में चर्चा के दौरान आवास प्लस टू प्वाइंट ज़ीरो के संबंध भी जानकारी दी गई साथ ही पानी बचाने के लिए शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर सुनील मंडावी सरपंच,हरी राम सिन्हा सचिव,राजेश्वर धुवे, नैनसिंह पटेल,राजा राम साहू,रामकुमार मंडावी,दुलार मंडावी,परमानंद ठाकुर सहित बड़ी संख्या ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री साय ने उच्च शिक्षा विभाग के कार्यों की समीक्षा की

छत्तीसगढ़ को शिक्षा का राष्ट्रीय केन्द्र बनाने का संकल्प : साय



- देश के टॉप-100 शैक्षणिक संस्थानों में स्थान दिलाने के लिए विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों की गुणवत्ता सुधार पर विशेष जोर

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायपुर, 28 अप्रैल। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों को गुणवत्ता के आधार पर देश के टॉप 100 शैक्षणिक संस्थानों की रैंकिंग में शामिल करने के लिए विशेष प्रयास किए जाएं। उन्होंने कहा कि यदि ऐसा किया गया तो अन्य राज्यों के विद्यार्थी भी पढ़ाई के लिए छत्तीसगढ़ को वीर्यता

देंगे, जिससे प्रदेश की शैक्षणिक छवि राष्ट्रीय स्तर पर सुदृढ़ होगी।मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने आज अपने निवास कार्यालय में उच्च शिक्षा विभाग के कार्यों की समीक्षा करते हुए यह बात कही। मुख्यमंत्री साय ने निर्देशित किया कि कोरबा, दंतवाड़ा और रायगढ़ जैसे जिलों में, जहां पर्याप्त डीएमएफ (जिला जलनिधि निधि) की राशि उपलब्ध है, वहां कुछ महाविद्यालयों को चिन्हित कर, विषय विशेष के राष्ट्रीय स्तर के मॉडल महाविद्यालयों के रूप में विकसित किया जाए।

उन्होंने कहा कि ऐसे महाविद्यालय न केवल प्रदेश के विद्यार्थियों के लिए, बल्कि देश-विदेश के विद्यार्थियों के लिए भी ऐसा किया गया तो अन्य राज्यों के विद्यार्थी भी पढ़ाई के लिए छत्तीसगढ़ को वीर्यता

ऑफ प्रैक्टिस की नीति को अपनाने पर बल दिया।

उन्होंने कहा कि विभिन्न क्षेत्रों के ख्यातिलब्ध विषय विशेषज्ञों को शिक्षण से जोड़ने से विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान और समसामयिक जानकारी का सीधा लाभ मिलेगा। इसी क्रम में उन्होंने इंद्रिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ को और अधिक उन्नत बनाने हेतु विशेष रणनीति और प्रयास किए जाने के निर्देश भी दिए। इस अवसर पर उच्च शिक्षा विभाग के सचिव डॉ. भारतीदासन ने विभागीय गतिविधियों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि प्रयासमंत्री उषा योजना के तहत बस्तर विश्वविद्यालय को मेरु योजना (बहु विषयक शिक्षा एवं शोध विश्वविद्यालय)

दीदी ई-रिक्शा सहायता योजना: महिलाएं आर्थिक रूप से बनेंगी आत्मनिर्भर: डॉ. रमन



■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

राजनांदगांव 28 अप्रैल। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने आज स्पीकर हाऊस राजनांदगांव में दीदी ई-रिक्शा सहायता योजना अंतर्गत 9 महिला हितग्राहियों को ई-रिक्शा प्रदान किया। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने सभी हितग्राहियों को ई-रिक्शा मिलने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने कहा कि महिलाओं को सक्षम बनाने के लिए

दीदी ई-रिक्शा सहायता योजना श्रम विभाग की महत्वपूर्ण योजना है। इस योजना के तहत महिलाओं को आर्थिक और स्वावलंबन की दिशा में आत्मनिर्भर बनने के लिए ई-रिक्शा प्रदान किया गया है। दीदी ई-रिक्शा सहायता योजना के तहत प्रत्येक महिला हितग्राहियों को 1 लाख रुपए की सब्सिडी प्रदान की गई है। उन्होंने कहा कि ई-रिक्शा से अब महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त बनेंगी और अपने परिवार की सभी जरूरतों पूरा कर पाएंगी। इस दौरान विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने जिले के ग्राम केसला निवासी गीता यादव, ग्राम पटुमरा निवासी ललिता, ग्राम धर्मापुर निवासी गायत्री बाई, ग्राम भंवसरा निवासी रजनी गुप्ता, रामकृष्ण वार्ड निवासी वर्षा राणी, तिलक वार्ड निवासी किरण बाई, मोतीपुर वार्ड निवासी अनुपा देवांगन, शंकरपुर वार्ड निवासी पुष्पलता देवांगन को ई-रिक्शा प्रदान किया।

कृष्णा विकास के छात्रों ने आईआईटी भिलाई परिसर का दौरा किया

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

भिलाई, 28 अप्रैल। कृष्णा विकास प्रौद्योगिकी संस्थान के छात्रों ने सतत विकास और शून्य अपशिष्ट प्रबंधन तथा जल प्रबंधन से संबंधित पहलों का अध्ययन करने के लिए आईआईटी भिलाई का दौरा किया। यह दौरा एक ज्ञानवर्धक अनुभव साबित हुआएं जिससे यह समझने में मदद मिली कि एक प्रमुख शैक्षणिक संस्थान अपने बुनियादी ढांचे और दैनिक कार्यों में पर्यावरणीय जिम्मेदारी को कैसे एकीकृत कर



सकता है। आईआईटी भिलाई की इमारतों को हरित वास्तुकला सिद्धांतों के साथ डिज़ाइन किया गया है जो ऊर्जा दक्षताएं इष्टतम प्राकृतिक प्रकाश व्यवस्था और वेंटिलेशन

सुनिश्चित करते हैं। संस्थान नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर भी उत्तरोत्तर बढ़ रहा है जिसमें नेट-जीरो ऊर्जा संस्थान बनने के अपने दीर्घकालिक लक्ष्य के हिस्से के रूप में पूरे परिसर में सौर पैनल लगाए जा रहे हैं। पूरे परिसर में वर्षा जल संचयन संचर्चनाएं स्थापित की गई हैं और 4 करोड़ लीटर से अधिक की कुल भंडारण क्षमता वाले बड़े तालाबों का उपयोग वर्षा जल को

इकट्ठा करने और संग्रहीत करने के लिए किया जाता है। इसके अलावा वाष्पक्रम और रसोई से निकलने वाले ग्रेवाटर को उपचारित किया जाता है और भूमिर्माण और शौचालय फ्लशिंग जैसे गैर-पीने योग्य उद्देश्यों के लिए पुनरु उपयोग किया जाता है। इससे ताजे पानी की खपत में काफी कमी आती है और जिम्मेदार जल प्रबंधन का उदाहरण मिलता है। प्राचार्य एन देवांगन और वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी रजनीश नायर ने इस यात्रा में सहयोग दिया तथा कार्यक्रम का समन्वय डीन रिसर्च डॉ मनीषा अग्रवाल ने किया।

मां कर्मा भवन के बाउंड्रीवाल निर्माण के लिए 5 लाख रुपए देने की घोषणा

मां कर्मा के आशीर्वाद से साहू समाज कर रहा तरक्की: डॉ. रमन सिंह

- विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ग्राम धीरी में भक्त मां कर्मा जयंती समारोह एवं मूर्ति स्थापना कार्यक्रम में हुए शामिल
- शासकीय हाई स्कूल धीरी में 6 लाख 96 हजार रुपए की लागत से निर्मित अतिरिक्त कम्प्यूटर कक्ष भवन का किया लोकार्पण

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

राजनांदगांव 28 अप्रैल। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह आज राजनांदगांव विकासखंड के ग्राम धीरी में आयोजित भक्त मां कर्मा जयंती समारोह एवं मूर्ति स्थापना कार्यक्रम में शामिल हुए। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने सबसे पहले मां कर्मा भवन धीरी में भव्य भक्त मां कर्मा की प्रतिमा की

पूजा-अर्चना की। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सिंह ने सभी को मां कर्मा जयंती की बधाई एवं शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष ने डॉ. रमन सिंह ने मां कर्मा भवन के बाउंड्रीवाल निर्माण के लिए 5 लाख रुपए घोषणा की। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने ग्राम धीरी प्रवास के दौरान शासकीय हाई स्कूल धीरी में 6 लाख 96 हजार रुपए की लागत



से निर्मित अतिरिक्त कम्प्यूटर कक्ष भवन का लोकार्पण किया।

विधानसभा अध्यक्ष ने डॉ. रमन

सिंह ने कहा कि मां कर्मा की साधना, उपासना और भक्ति देखकर भगवान कृष्ण स्वयं उनके

संसार का नियम है और यह विश्व के हर देश और वहां के हर आदमी पर लागू होता है कि जो आप दूसरों को दोगे वहीं आपको दूसरों मिलेगा। जो आप बोओगे वही आप काटोगे, किसी तो दुख दोगे तो बदले में दुख ही मिलेगा। दुनिया में दूसरों को दुख देने वाले सोचते हैं कि बदले में उनको दुख नहीं मिलना चाहिए। ऐसा तो कभी नहीं हुआ और ऐसा कभी होगा भी नहीं कि जिसने दूसरों को दुख दिया है बदले में उसको सुख मिलेगा। जिसने जैसा दुख दिया है, बदले में उसको वैसा ही दुख मिलेगा। जिसने छोटा दुख दिया है, उसे छोटा दुख मिलेगा,जिसने बड़ा दुख दिया है, उसे बड़ा दुख मिलेगा। दुख देने वाला सोचता है कि वह किसी को दुख देकर दुख पाने से बच पाएगा, संसार में कम का फल अटल है,कर्म का फल तो अटल है, वह टल नहीं सकता, अभी नहीं मिला तो आज मिलेगा, आज नहीं मिला तो कल मिलेगा लेकिन मिलेगा जरूर। दुख का फल दुख है। उससे बचने की स्थिति है, वह उसी दुख देने का परिणाम है। पाकिस्तान को नेता दुख पा रहे हैं, पाकिस्तान की जनता दुख पा रही है। भारतीय मान्यता है कि कर्म का फल तीन तरह से मिलता है। एक होता व्यक्तिगत कर्म का फल व्यक्तिगत रूप से मिलता है। आपने किसी व्यक्ति को दुख दिया तो आपको भी किसी

व्यक्ति से दुख मिलेगा। यदि आपके परिवार ने किसी तो दुख दिया है तो किसी परिवार से आपके परिवार को दुख मिलेगा । आपके समाज ने किसी दूसरे समाज को दुख पहुंचाया है आपके समाज को भी किसी समाज से दुख मिलेगा। अगर आप जिस देश में रहते हैं उस देश ने किसी को दुख पहुंचाया है तो आपके देश को किसी देश से दुख मिलेगा। कई बार सोचता है कि मैंने तो किसी को कोई दुख नहीं पहुंचाया है। फिर मुझे या मेरे परिवार, मेरे समाज का मेरे देश को कोई दुख क्यों मिल रहा है। हमें कई बार पता नहीं रहता है कि हमने कब किसके साथ व्यक्तिगत,परिवार,समाज या देश के रूप में क्या बुरा किया है। उसका परिणाम जब भोगना पड़ता है तो हमको लगते हैं कि हमने तो कुछ नहीं किया फिर हमको दुख क्यों मिल रहा है। दुख देने वाला व्यक्ति हो,परिवार हो,समाज हो या कोई देश हो, उसकी इज्जत कोई नहीं करता है, सब जानते हैं कि इसने बुरा किया है और उसके साथ जब बुरा होता है तो कोई नहीं हँसता खड़ा नहीं होता है कि इसको तो अपने कर्म का फल भुगतना पड़ रहा है। पाकिस्तान की विश्व में जरा भी इज्जत नहीं है, सभी उसे आतंकवादी को पनाह देने वाला देश मानते हैं, आतंकवाद का उपयोग कर पड़ोसी देशों को परेशान करने वाला मानते हैं। उसे इसकी सजा दी जाती है, वह आज विश्व के तमाम देशों के बीच अकेला है तो इसीलिए हैं कि वह आतंकवाद को पालना व पोसना छोड़ नहीं रहा है, आतंकवाद का उपयोग भारत को परेशान के लिए करता रहता है। तीन दशक हो गए हैं

संपादकीय

पाकिस्तान आतंकवादियों को उपयोग कर भारत को दुख दे रहा है, परेशान कर रहा है। भारत दुनिया को यह बताने के अलावा कुछ नहीं कर पा रहा था देखों पाकिस्तान भारत में आतकवादियों को भेज कर भारतीयों को दुख पहुंचा रहा है,

दुख के बदले में तो दुख ही मिलता है

इस बात सबूत भी भारत पाकिस्तान को देता रहा है। लेकिन

पाकिस्तान के खिलाफ भारत की तरफ से या दुनिया की तरफ किसी तरह का कार्रवाई नहीं हुई इसलिए पाकिस्तान सुचारु नहीं। आर्थिक स्थिति खराब होने से जरूर वह पहले की तरह आतंकवादियों का उपयोग नहीं कर पा रहा था लेकिन हर एक दो साल में वह किसी बड़ी घटना का अंजाम देकर भारत को दुख पहुंचाता रहा है। मोदी के पीएम बनने के पहले आतंकवाद पूरे देश के लिए एक गंभीर समस्या था, आतंकवादी सीमा से घुसपैठ कर देश के किसी भी राज्य के किसी भी हिस्से में बमविस्फोट कर लोगों को मारते थे और भाग जाते थे, उसके बाद सरकार रोगा रोती रहती थी कि

निकल सकती हैं। लेकिन जब समाज खुद इस उपलब्धि को जातीय खांचों में तोड़ने लगे, तो यह लोकतंत्र की आत्मा पर एक आघात है।

असली संघर्ष और दिखावे का फर्क- असली संघर्ष वह है जो अनकहा रह जाता है। जो ग्रामीण बैकग्राउंड से आता है, लेकिन खुद को बेचने की कोशिश नहीं करता। जो सोशल मीडिया पर अपने फोटोशूट्स और ‘कहानी’ पोस्ट नहीं करता। जो अपनी सफलता को निजी संतोष समझता है, न कि व्यापारिक ब्रांड। दूसरी ओर, जो संघर्ष को एक उत्पाद बना देता है, वही आज वायरल होता है। वही बड़ी-बड़ी कोचिंग कंपनियों के विज्ञापन में आता है। वही सोशल मीडिया स्टार बनता है।

आखिर सवाल वही – क्यों और किसके लिए ?-क्या वरदर टॉपर्स बनने का मकसद अभी भी वही है – समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना, न्याय का वितरण करना, प्रशासन में ईमानदारी लाना ?

या फिर अब यह एक वैकल्पिक ‘सेलिब्रिटी करियर’ बन चुका है ?-यह चिंतन आवश्यक है, वरना एक दिन सिविल सेवा भी पूरी तरह से एक ग्लैमर इंडस्ट्री में तब्दील हो जाएगी – जहां मूल्य नहीं, ब्रांडिंग चलेगी; जहां सेवा नहीं, सेल्फी चलेगी।

निष्कर्ष: सफलता को वगीकृत करने से बचें–देश को जरूरत है उन युवाओं की जो सफलता को अपने स्वा्थ्य से नहीं, अपने कर्तव्य से जोड़ें। जो जाति, धर्म या वर्ग से परे जाकर खुद को सिर्फ एक नागरिक के रूप में प्रस्तुत करें। जो यह समझें कि वरदर परीक्षा से भी बड़ी परीक्षा आगे आने वाली है – जब प्रशासनिक पद पर बैठकर, बिना भेदभाव के, बिना प्रचार के, निष्पक्ष सेवा देनी होगी।

तभी इस देश का लोकतंत्र मजबूत रहेगा, और तब ही असली प्रतिभा का सम्मान होगा – बिना जाति, धर्म, पृष्ठभूमि के बंधन के।

पाकिस्तान ने ऐसा किया लेकिन वह पाकिस्तान ऐसा दोबारा न कर सके इसके लिए कुछ नहीं किया। मोदी के पीएम बनने के बाद आतंकवाद का इलाज किया गया, आतंकवाद के समाप्त करने के लिए योजना बनाकर काम किया गया। इससे पिछले 11 सालों में आतंकवाद तो देश के तमाम राज्यों से सफाया हो गया है तथा सीमावर्ती राज्य जम्मू कश्मीर में वह अब रह गया है। वहां भी आतंकवाद व अलगाववाद की भावना कम हुई है तथा राज्य के लोग शांति से अपना व राज्य का विकास चाहते हैं। भारत वाले कश्मीर व पाक कब्जे वाले कश्मीर की हालत की तुलना की जाती है तो भारत केकश्मीर में बेहतर हालत का पता चलता है तो पाकिस्तान के नेताओं की असफलता सामने आती है कि भारत के कश्मीर में कैसे विकास हो रहा है और पाक कब्ज कश्मीर में कितने बुरे हालत है, यह पाकिस्तान के नेताओं को अच्छा नहीं लगता है। वह अपने कब्जे वाले कश्मीर में अर्चछा तो कुछ कर नहीं पा रहे हैं, लोग भारत वाले कश्मीर ने तुलना न कर इसके लिए वह हर साल कुछ आतंकवादी वारदात कर अपने कब्जे वाले कश्मीर के लोगों को यह बताने का प्रयास करते हैं। भारत सरकार अपने कश्मीर में हालत अच्छा होने का जो दावा करती है, वह सच नहीं है, वह झूट है। भारत वाले कश्मीर में तो अलगाववाद व आतंकवाद आज भी है, वहां पहले की तरह बुरे हालत आज भी है। वहां पहले भी लोग मारे जाते थे, अब भी लोग मारे जा रहे हैं। पाकिस्तान यह भूल जाता है कि अब भारत में कांग्रेस की कमजोर

सरकार नहींहै, मोदी की मजबूत सरकार है, वह घर में घुसकर मारती है और पाकिस्तान कुछ नहीं कर पाता है। पाकिस्तान ने इस बार बड़ी गलती कर दी। उसने कश्मीर में बड़ी संख्या में पर्यटकों की हत्या कर दी। इस बार की बड़ी गलती के कारण कोई देश उसके साथ खड़ा नहीं हो सकता। कश्मीर में कश्मीरी लोगों ने पाक के इस कदम की निंदा की है। क्योंकि पर्यटक आते हैं तो कश्मीरियों को रोजगार मिलता है, आय होती है। उसकी आयव्यवस्था मजबूत होती है। पाकिस्तान ने इस पर कश्मीरियों को सबसे बड़ा नुकसान किया है, मोदी सरकार ने पाकिस्तान की इस हकत को गंभीरता से लिया है तथा इसका जवाब कैसे दिया जाए इस पर रोज चर्चा हो रही है। देश के लोग तो चाहते हैं कि पर्यटकों की हत्या का बदला सरकार को जल्द से जल्द लेना चाहिए। सरकार इसके लिए हर तरह की तैयारी कर रही है, विश्व के जनमत को बता रही है, उसके देश के लोगों के साथ बुरा किया गया है, भारत को भी जवाब देना है। सभी देशों ने भारत को जवाब देने की छूट दे दी है। सभी को कहना है कि भारत के साथ पाकिस्तान ने बुरा किया है, इसलिए भारत को इसका जवाब देने का अधिकार है। भारत को जवाब देना है, मुंहतोड़ जवाब देना है। पांच फैसले के जरिए भारत ने बता दिया है कि वह पाकिस्तान से बहुत नाराज है। पाकिस्तान को भारत सजा देगा और ऐसी सजा देगा जिसे पाकिस्तान की कई पीढिया याद रखेंगी।

राशिफल

प्रतिभा गुम, जाति और पृष्ठभूमि का बाजार गर्म

डॉ सत्यवान सौरभ



हर साल जब संघ लोक सेवा आयोग (वढरउ) के परिणाम आते हैं, तो देश का एक बड़ा वर्ग उत्साहित होता है – कहीं उम्मीदें टूटती हैं, कहीं सपने पूरे होते हैं। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से एक नया और खतरनाक ट्रेंड भी देखने को मिल रहा

है – सफल अभ्यर्थियों की प्रतिभा और मेहनत पर चर्चा करने के बजाय, उनकी जाति, धर्म और आर्थिक पृष्ठभूमि को माइक्रोस्कोप से जांचा जा रहा है। और फिर उसी के आधार पर उनके संघर्ष की कहानी गढ़ी जाती है, सोशल मीडिया पर महिमामंडन या विवाद खड़ा किया जाता है।

एक तरफ सफल अभ्यर्थी अपनी

मेहनत को सेलिब्रेट करना चाहते हैं, दूसरी

तरफ समाज उन्हें एक ‘ट्रॉफी’ बना देता है –

या तो जातीय गौरव के नाम पर, या

भावनात्मक बाजार के नाम पर।

जब प्रतिभा गौण हो जाए और पहचान प्राथमिक–क्या हम इतने खोखले हो गए हैं कि अब सफलता भी जाति की चश्मे से देखनी पड़ती है ? एक छत्र जिसने वर्षों तक दिन-रात एक कर दिए, जो असफलताओं के बावजूद डटा रहा, जिसने निजी सुखों को छोड़ तपस्या की – उसकी कहानी अब उसकी प्रतिभा नहीं, उसकी जातीय पहचान से मापी जाएगी ? सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स और न्यूज चैनल्स अब सबसे पहले पूछते हैं: यह topper किस जाति से है ?

उसके बाद आता है अगला: पिता क्या करते हैं–फिर, हम कहीं से भी किसान, मजदूर या निम्नवर्गीय पृष्ठभूमि जुड़ जाए, तो सफलता की कहानी में ‘संघर्ष का मसाला’ डालकर उसे और अधिक बिकाऊ बना दिया जाता है।

देश की सबसे प्रतिष्ठित परीक्षा अब जातीय गौरव का तमाशा बन चुकी है। जैसे ही रिजल्ट आता है, प्रतिभा और मेहनत को धकिया कर जाति, धर्म और ह्यकिसान की झोपड़ीहू की स्क्रिप्ट सोशल मीडिया पर दौड़ने लगती है। एसी कमरों में पढ़ने वाले अब खुद को किसान का बेटा घोषित करते हैं, ताकि संघर्ष बिके। टॉपर बनने के बाद सेवा की बजाय सेल्फी और सेमिनार का मोह शुरू हो जाता है। हर दल, हर विचारधारा, हर वर्ग अपने-अपने टॉपर को पकड़कर झंडा उठाता है – देखो, ये हमारा है ! किसी को सवर्ण गौरव चाहिए, किसी को दलित चमत्कार। और इस पूरे मेले में असली हीरो – यानी मेहनत और ईमानदारी – कहीं कोने में खड़ी, अकेली, उपेक्षित रह जाती है। वढरउ अब परीक्षा नहीं, जातीय राजनीति, इमोशनल मार्केटिंग और ब्रांडिंग का अखाड़ा बनता जा रहा है। और सवाल वही – ये अफसर समाज सेवा के लिए बन रहे हैं या सोशल मीडिया के लिए ?

‘किसान का बेटा’ ब्रांडिंग का नया ट्रेंड–यह एक विचित्र विडंबना है कि अब बड़े-बड़े शहरों के पॉश इलाकों में एसी कमरों में पढ़ने वाले भी खुद को किसान का बेटा बताने लगे हैं। परिवार में कभी पुरखों ने खेती की हो, या मामूली जमीन हो, तो भी उसे किसान परिवार का बेटा घोषित कर दिया जाता है। असलियत यह है कि जिन किसानों की हालत आज भी बैंकों के कर्ज में दबी है, जिनके बच्चे आज भी टूटी हुई पाठशालाओं में पढ़ रहे हैं, वे इस ‘किसान की ब्रांडिंग’ का हिस्सा नहीं बन पाते। यह नया संघर्ष बेचो मॉडल दरअसल एक बड़े मध्यमवर्गीय या उच्चवर्गीय तबके का सोशल इमोशनल इंजीनियरिंग है।

सफलता का नया मकसद: सेवा या सेल्फ ब्रांडिंग–जहां एक समय सिविल सेवा का मतलब होता था – समाज की बेहतरी के लिए समर्पित जीवन। अब इसका अर्थ बदलता दिख रहा है।

इसमें कोई बुराई नहीं है कि युवा अपनी सफलता का जश्न मनाएं या दूसरों को प्रेरित करें। लेकिन सवाल तब उठता है जब सेवा

का भाव पीछे छूट जाए, और सेल्फ ब्रांडिंग ही प्राथमिक एजेंडा बन जाए।

जातीय राजनीति का नया अखाड़ा: UPSC-UPSC का स्वरूप अब राजनीतिक लाभ का भी माध्यम बनता दिख रहा है। अलग-अलग राजनीतिक विचारधाराएं, मीडिया हाउस और जातीय संगठन वढरउ टॉपर्स को ‘अपना’ बताने की होड़ में लगे हैं। कहीं दलित गौरव के नाम पर प्रचार हो रहा है, तो कहीं सवर्ण शा्ना के नारे गढ़े जा रहे हैं। कोई ओबीसी चमत्कार कहता है, तो कोई किसान पुत्री को उड़ा। असल में इन सबमें एक साधारण सच्चाई गायब हो जाती है – मेहनत तो मेहनत होती है, न जाति देखती है, न मजहब, न वंश।

UPSC: एकमात्र ऐसी परीक्षा जो मूल्यों की कसौटी पर कसती है–UPSC भारतीय लोकतंत्र की एक दुर्लभ उपलब्धि है – जहां किसी जाति, धर्म, वर्ग से परे जाकर व्यक्ति के ज्ञान, समझ, सोच, तर्कशक्ति और निर्णय क्षमता को परखा जाता है। यह परीक्षा बार-बार साबित करती है कि देश के अंतिम छोर से भी प्रतिभाएं

गंभीर मुद्दा

भारत में इस्तीफा देने वाले आईएएस और आईपीएस अधिकारियों का संकट

प्रियंका सौरभ

भारत में आईएएस और आईपीएस जैसे उच्च प्रशासनिक पदों पर बैठे अधिकारी कभी सम्मान और



जिम्मेदारी के प्रतीक माने जाते थे। ये अधिकारी न केवल सरकार की नीतियों को लागू करने के लिए जिम्मेदार होते हैं, बल्कि वे भारतीय समाज में बदलाव लाने के लिए भी कार्यरत रहते हैं। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में, इन अधिकारियों द्वारा पदों से इस्तीफे देने की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि देखी जा रही है। यह इस्तीफे किसी सामान्य बदलाव का परिणाम नहीं हैं, बल्कि इनके पीछे कई गहरे और गंभीर कारण छिपे हुए हैं। क्या कारण हैं कि ये आईएएस और आईपीएस अधिकारी अपने पदों से इस्तीफा दे रहे हैं ? क्या यह भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था और शासन प्रणाली के लिए खतरे की घंटी है ? क्या इससे यह संकेत मिलता है कि सिस्टम ईमानदार और सक्षम अधिकारियों को बाहर कर रहा है ? यह सवाल उन सभी नागरिकों के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो सार्वजनिक सेवा में विश्वास रखते हैं।

इस्तीफों की बढ़ती संख्या: कारणों की गहराई में–भारतीय सिविल सेवा से इस्तीफा देने वाले अधिकारियों की संख्या बढ़ने के कारणों में राजनीति, प्रशासनिक हताशा, स्वायत्तता की कमी, और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं प्रमुख हैं। इन कारणों पर विस्तृत रूप से चर्चा करना महत्वपूर्ण है ताकि हम समझ सकें कि क्यों भारतीय प्रशासन में इस समय इतनी अनिश्चितता और असंतोष का माहौल है।

राजनीतिक दबाव और प्रशासनिक हस्तक्षेप–भारतीय सिविल सेवा से इस्तीफा देने वाले अधिकारियों के सबसे बड़े कारणों में से एक राजनीतिक दबाव है। कई आईएएस और आईपीएस अधिकारी इस बात से परेशान हैं कि राजनीति के बढ़ते हस्तक्षेप के कारण उनके निर्णयों में स्वतंत्रता की कमी हो गई है। जब अधिकारी सरकारी योजनाओं और नीतियों को लागू करने में पूरी स्वतंत्रता का अनुभव नहीं करते, तो यह उनकी कार्यक्षमता को प्रभावित करता है। वे पाते हैं कि उन्हें जो काम सौंपा गया है, वह राजनीतिक दबावों के चलते निष्पक्ष रूप से नहीं किया जा सकता।

इस संदर्भ में, कुछ प्रसिद्ध आईएएस और

भारत में सिविल सेवाओं से इस्तीफों की बढ़ती संख्या एक गंभीर मुद्दा बन गई है। कई आईएएस और आईपीएस अधिकारी, जिनमें कय्य व मिश्रा, रोमन सैनी और अन्य युवा अधिकारी शामिल हैं, अपने पदों से इस्तीफा दे रहे हैं। इसके पीछे राजनीतिक दबाव, प्रशासनिक हताशा, स्वायत्तता की कमी और मानसिक स्वास्थ्य संकट जैसे कारण हैं। इन अधिकारियों का पलायन न केवल उनके व्यक्तिगत संघर्षों को उजागर करता है, बल्कि यह भारतीय शासन मॉडल के लिए भी एक चेतावनी है। यह स्थिति सरकारी तंत्र के लिए एक बड़ा संकट साबित हो सकती है।

आईपीएस अधिकारियों ने इस्तीफा देने का निर्णय लिया। आईएएस अधिकारी कन्नन गोपल का इस्तीफा एक उदाहरण है। उन्होंने 2019 में जम्मू और कश्मीर के विशेष राज्य का लेने में कोई खतम करने के बाद वहां की स्थिति पर असंतोष व्यक्त करते हुए अपना इस्तीफा दिया था। उनके इस्तीफे ने पूरे देश में राजनीतिक हस्तक्षेप के बारे में चर्चा शुरू कर दी थी।

स्वायत्तता की कमी–स्वायत्तता की कमी भारतीय सिविल सेवा के एक और महत्वपूर्ण कारण के रूप में उभर कर सामने आई है। कई अधिकारी यह महसूस करते हैं कि उनकी स्वतंत्रता, जो पहले उच्च प्रशासनिक निर्णय लेने में दी जाती थी, अब समाप्त हो गई है। अब उनके निर्णयों को राजनीतिक प्रेशर के तहत बदलने की कोशिश की जाती है। जब अधिकारी अपने फैसले स्वतंत्र रूप से नहीं ले सकते, तो यह उनके आत्मविश्वास को प्रभावित करता है।

आईपीएस अधिकारी विवेक कुमार का इस्तीफा इस बात का एक और उदाहरण है। वे उत्तर प्रदेश में लंबे समय तक पुलिस सेवा में रहे, लेकिन उन्होंने प्रशासनिक स्वतंत्रता की कमी और राजनीतिक दबाव के कारण इस्तीफा दे दिया। उनका यह कदम न केवल उनके व्यक्तिगत संघर्षों का प्रतीक था, बल्कि पूरे प्रशासनिक तंत्र की असलियत को उजागर करता था।

मानसिक स्वास्थ्य और तनाव–किसी भी सरकारी अधिकारी की कार्यशैली में अत्यधिक मानसिक दबाव और तनाव होता है। यह तनाव केवल कार्य की अधिकता या जिम्मेदारियों के कारण नहीं होता, बल्कि यह भी तब बढ़ जाता है जब अधिकारी अपने कार्यों में स्वतंत्रता और ईमानदारी से फैसले नहीं ले सकते। मानसिक तनाव एक अन्य बड़ा कारण है जो अधिकारियों को इस्तीफा देने के लिए मजबूर करता है। आईएएस अधिकारी शाह फैसल का इस्तीफा

इस मानसिक दबाव के कारण हुआ था। उन्होंने 2019 में अपने पद से इस्तीफा दे दिया था और इसके पीछे का कारण जम्मू और कश्मीर की स्थिति और वहां के प्रशासनिक तंत्र में व्याप्त मानसिक तनाव था।

प्रशासनिक हताशा और भ्रष्टाचार–भारत में कई अधिकारियों ने यह महसूस किया है कि भारतीय प्रशासनिक तंत्र में भ्रष्टाचार, अनियमितताएं, और राजनीतिक हस्तक्षेप इतना बढ़ चुका है कि उनसे काम करना असंभव हो गया है। ईमानदार और कड़ी मेहनत करने वाले अधिकारियों को अक्सर इस तंत्र में प्रताड़ना और अपमान का सामना करना पड़ता है। जब एक ईमानदार अधिकारी को अपने प्रयासों का कोई परिणाम नहीं मिलता, तो वह हताशा हो जाता है और इस्तीफा देने का फैसला करता है। आईएएस अधिकारी अनुज कुमार ने इस स्थिति से परेशान होकर इस्तीफा दिया। उनका कहना था कि प्रशासनिक स्तर पर भ्रष्टाचार और अव्यवस्था बढ़ने के कारण वे अपने कर्तव्यों का पालन नहीं कर पा रहे थे।

इस्तीफा देने वाले प्रमुख युवा अधिकारी–हाल के वर्षों में, कई युवा आईएएस और आईपीएस अधिकारियों ने भी इस्तीफा दिया है। इनमें से कुछ अधिकारियों ने अपने इस्तीफे से यह संकेत दिया है कि युवा शक्ति और जिम्मेदारी का बोझ उठाना उनके लिए असंभव हो गया है। ऐसे अधिकारियों के नाम निम्नलिखित हैं:

काव्या मिश्रा –काव्या मिश्रा, जो एक युवा आईपीएस अधिकारी थीं, ने अपने पद से इस्तीफा देने का निर्णय लिया। उन्होंने अपने इस्तीफे में यह बताया कि उन्हें प्रशासनिक तंत्र में अपना योगदान देने के दौरान राजनीतिक हस्तक्षेप और स्वायत्तता की कमी के कारण कठिनाई हो रही थी।

रोमन सैनी – रोमन सैनी, जिन्होंने अपनी

आईएएस सेवा से इस्तीफा देने का ऐतिहासिक कदम उठाया था, वे एक युवा अधिकारी थे जिन्होंने देश में वढरउ परीक्षा की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए एक नया दृष्टिकोण पेश किया। उन्होंने 2013 में इस्तीफा दिया, जब उन्होंने महसूस किया कि उन्हें प्रशासनिक कार्यों के बजाय शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान देना अधिक संतोषजनक था। उनके इस्तीफे ने युवा अधिकारियों के बीच एक नई बहस को जन्म दिया कि क्या वे अपनी सेवाओं को छोड़कर समाज के अन्य क्षेत्रों में योगदान दे सकते हैं।

प्रवीण कुमार – प्रवीण कुमार एक अन्य युवा आईएएस अधिकारी थे जिन्होंने प्रशासनिक कार्यों के कारण आए मानसिक तनाव को देखते हुए इस्तीफा दिया। उन्होंने यह कदम उठाते हुए कहा कि प्रशासन में बहुत से सुधारों की आवश्यकता है और अगर उन्हें स्वायत्तता और स्वतंत्रता का अवसर मिलता, तो वे निश्चित रूप से अपनी सेवाओं को जारी रखते।

क्या यह भारत के शासन मॉडल के लिए खतरा है ?–इस बढ़ती हुई इस्तीफों की संख्या से यह सवाल उठता है कि क्या यह भारत के शासन मॉडल के लिए खतरे की घंटी है ? यदि सिविल सेवाओं के ये उच्च अधिकारी इस्तीफा देते रहते हैं, तो यह देश के प्रशासनिक तंत्र के लिए गंभीर संकट पैदा कर सकता है। ऐसे अधिकारियों की कमी से न केवल शासन व्यवस्था प्रभावित होती है, बल्कि नागरिकों को भी उस प्रशासनिक तंत्र से विश्वास उट सकता है, जो उनके कल्याण और न्याय के लिए जिम्मेदार है।

नई राह–भारतीय प्रशासनिक तंत्र में इस्तीफा देने वाले आईएएस और आईपीएस अधिकारियों की बढ़ती संख्या यह दर्शाती है कि सिस्टम में कुछ गंभीर खामियां हैं। राजनीतिक दबाव, प्रशासनिक हताशा, स्वायत्तता की कमी और मानसिक तनाव जैसे कारण अधिकारियों के इस्तीफे का प्रमुख कारण बन रहे हैं। यह स्थिति केवल इन अधिकारियों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे देश के शासन तंत्र के लिए भी एक चेतावनी है। हमें यह समझना होगा कि आवश्यकता है कि जब तक प्रशासनिक तंत्र में सुधार नहीं किया जाएगा, तब तक ईमानदार और सक्षम अधिकारियों को काम करने का उचित माहौल नहीं मिलेगा। यदि हम भारत की शासन प्रणाली को बेहतर और पारदर्शी बनाना चाहते हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि इन अधिकारियों को स्वतंत्रता और समर्थन मिले, ताकि वे अपनी भूमिका पूरी ईमानदारी और जिम्मेदारी से निभा सकें।

3 हेल्दी वेट लॉस ड्रिंक्स ट्राई करके देखें

बढ़ते वजन से छुटकारा पाने के लिए आप अब सोने से पहले ये 3 हेल्दी वेट लॉस ड्रिंक्स ट्राई करके देखें। खास बात यह है कि वजन घटाने के लिए आपको एक्सरसाइज या घंटों जिम में पसीना भी नहीं बहाना पड़ेगा। आइए जानते हैं कोन से हैं वो 3 ड्रिंक्स जिनका सोने से पहले सेवन करने से आप बढ़ते वजन से आसानी से छुटकारा पा सकते हैं।



अध्ययनों में यह सुझाव दिया गया है कि कैमोमाइल टी शुगर लेवल को नियंत्रित करके वजन घटाने में मदद करती है।

दालचीनी की चाय–यदि आप कम समय में ही अपना वजन घटाना चाहते हैं, तो यह दालचीनी चाय का सेवन शुरू कर दें। वेट कंट्रोल करने के लिए दालचीनी की चाय बेस्ट नेचुरल ड्रिंक मानी जाती है। इस चाय में मेटाबॉलिज्म बढ़ाने के गुण मौजूद होने के साथ कई एंटीऑक्सिडेंट और एंटीबायोटिक गुण भी मौजूद होते हैं जो इसे अच्छा डिटॉक्सि ड्रिंक बनाते हैं। दालचीनी की चाय का सेवन करने से फैट को जलाने में मदद मिलती है। **मेथी की चाय**–अगर बढ़ते वजन के साथ आपको नॉंद न आने की समस्या भी परेशान करती है तो मेथी की चाय का सेवन जरूर करें। इसके अलावा अगर किसी दिन आपको लगे कि आपने जरूरत से ज्यादा भोजन खा लिया है, तो पाचन में सुधार के साथ खाना पचाने में यह चाय आपकी मदद कर सकती है। मेथी की चाय बनाने के लिए सबसे पहले एक चम्मच मेथी एक गिलास पानी में रातभर भिगोकर रख दें। सुबह इसे छानकर पानी अलग कर दें और इस पानी को गुनगुना कर ताप में सोने से पहले पीएं। नियमित रूप से इसके सेवन से आप बहुत जल्दी वजन कंट्रोल कर लेंगे।

रोज नहाना सेहत के लिए बेहद फायदेमंद

क्या आपको पता है, कि भारत के लोग दुनिया में सबसे ज्यादा नहाने वालों लोगों में शुमार हैं। धार्मिक मान्यताओं के चलते औसतन भारतीय तकरीबन रोज नहाते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि ऐसा कर- के वो अपने शरीर को पवित्र करते हैं। बहुत से लोग इसलिए रोज नहाते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि रोज पूजा-पाठ करने के लिए नहाना बेहद जरूरी है। पर असल में हर रोज नहाना आपकी सेहत के लिए भी बहुत जरूरी है। नेशनल सेंटर फॉर बायोलॉजिकल इनफार्मेशन में प्रकाशित शोध के अनुसार नहाने से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। कुछ लोगों पर किये गए इस अध्ययन में हर रोज नहाने से लोगों के दर्द, तनाव और अवसाद जैसे लक्षणों में कमी देखने को मिली। साथ ही नियमित नहाने से त्वचा में भी सुधार देखने को मिला। नहाने से रक्तचाप में सुधार होता है और ब्लड वेसस बेहतर तरीके से काम करती हैं। ऐसे लोग जिन्हें पहले से कोई हृदय की समस्या नहीं है, उनके लिए हल्के गर्म पानी से नहाना फायदेमंद साबित हो सकता है। हल्के गुनगुने पानी से नहाने से ब्लड प्रेशर कम होने लगता है और हृदय की प्रक्रियाओं में सुधार होता है। साथ ही गर्म पानी में नहाने से शरीर का रक्तचाप सुधरता है।

कतियाररास से चार संदिग्ध युवकों को पुलिस ने पकड़ा, पूछताछ जारी

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

दंतेवाड़ा 28 अप्रैल। सोमवार सुबह नगर के वार्ड नंबर 3 राजीव नगर वार्ड जिसे कतियाररास के नाम से भी जानते हैं उक्त वार्ड में एक सूने मकान में छिपकर रह रहे चार संदिग्ध युवकों को पुलिस ने आसपड़ोस वालों की मदद से पकड़ा है। पकड़े गए चारों युवक चोरी का काम करते थे। पुलिस चारों युवकों से पुछताछ कर रही है। कतियाररास में कई घरों में चोरी की घटना भी हुई है। ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि इन्हीं लोगों ने चोरी की वारदात को अंजाम

■ काफी दिनों से एक सूने मकान में छिपकर रह रहे थे पकड़े गए चारों युवक

■ आसपड़ोस के लोगों को शक होने पर उन्हें पकड़कर पुलिस के हवाले किया

दिया है। अब पुलिस पुछताछ में यह स्पष्ट होगा कि चारों युवक आखिर किस मंशा से सूने मकान में छिपकर रह रहे थे? कहाँ के रहने वाले हैं और



इनका मकसद क्या था? कतियाररास निवासी विनोद मालवीय ने बताया कि बीते कुछ दिनों से उनके घर के पीछे एक सूने मकान में चार कम उम्र के

लड़के कुछ दिनों से डेरा डालकर रह रहे थे। उन्हें शुरू से ही इस बात का शक था कि ये चारों युवक असामाजिक तत्व हैं और कहीं ना

कहीं चोरी वगैरह करते हैं। घर में लगे सीसीटीवी से जब यह स्पष्ट हुआ कि ये सभी चोर हैं और देर रात चोरी की घटना को अंजाम देते हैं तो इन्हें घेराबंदी कर इन्हें पकड़कर आज पुलिस के सुपुर्द किया गया है। यह भी जानकारी मिली है कि इनका कोई और एक मुख्य सरगना है जो इनसे चोरी का काम करवाता था। पुलिस पुछताछ में यह बात स्पष्ट होगा कि इनके साथ और कौन कौन मिला हुआ है। बता दें कि बीते कुछ दिनों से कतियाररास मोहल्ले के कई घरों में चोरी की घटना लगातार हो रही थी यकीनी तौर पर ये सभी चोरी

की घटना को इन चारों युवकों ने ही अंजाम दिया है। रात 2 बजे के बाद ये युवक सूने मकान से बाहर निकलकर चोरी की घटना को अंजाम देकर वापस इसी मकान में आकर छिपते थे। मोहल्लेवासियों की जागरूकता एवं सजगता के चलते इन चोरों को पकड़ा जा चुका है अब देखने वाली बात होगी कि पुलिस इस मामले में इन चोरों से कितनी सच्चाई उगलवा पाती है। फिलहाल पकड़े गए चारों संदिग्ध युवकों को कोतवाली में रखकर इनसे पुछताछ की जा रही है।

रमेश कश्यप के इलाज के लिए प्रशासन और 108 टीम का सराहनीय सहयोग



सुकमा, 28 अप्रैल। ग्राम कूकानार निवासी रमेश कुमार कश्यप, जो वर्षों से 108 आपातकालीन सेवा में निःस्वार्थ भाव से जनसेवा में जुटे रहे, आज खुद गंभीर बीमारी (केंसर) से जीवन संघर्ष कर रहे हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यंत दुर्बल होने के चलते उच्च स्तरीय इलाज कराना कठिन हो रहा था। इसी बीच, कलेक्टर महोदय देवेश कुमार ध्रुव एवं मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. कपिल देव कश्यप जी के संवेदनशील सहयोग से रमेश जी को चंडीगढ़ अस्पताल में बेहतर इलाज हेतु भेजने की प्रक्रिया पूर्ण की गई। आज सायं 8 बजे, 108 एम्बुलेंस सेवा के पायलट प्रेमानाथ सेठिया एवं टेक्नीशियन संतोष नाग की तत्परता से, रमेश कश्यप जी को ग्राम कूकानार से रायपुर के लिए पशुशुशु रवाना किया गया, जहाँ से आगे चंडीगढ़ के लिए प्रस्थान किया जाएगा। श्वरी जन सेवा ट्रस्ट, सुकुमा तथा रमेश जी के परिजनों व शुभचिंतकों की ओर से कलेक्टर महोदय, सीएमएचओ सर एवं 108 सेवा की पूरी टीम के प्रति हार्दिक आभार एवं अभिनंदन व्यक्त किया गया है। आपकी तत्परता और संवेदनशीलता ने एक ज़रूरतमंद परिवार को आशा, सहारा और जीवन का नया विश्वास दिया है। रमेश कश्यप जी जिन्होंने संकट की घड़ी में अनगिनत लोगों की जान बचाई, आज खुद मदद की आस में हैं। समाज से भी अपील है कि आगे आकर सहयोग करें और इस संघर्ष को साझा करें।

महाराणा प्रताप वार्ड में महापौर पाण्डे ने पार्षद व एमआईसी सदस्यों के साथ निरीक्षण किया



जगदलपुर, 28 अप्रैल। आज शहर के महाराणा प्रताप वार्ड में महापौर संजय पाण्डे ने पार्षद व एमआईसी सदस्यों के साथ निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान वार्डवासियों ने महापौर के समक्ष अपनी समस्याएं रखीं। सड़क, पानी बिजली जैसी समस्याओं का त्वरित कार्यवाही करने का निर्देश महापौर संजय पाण्डे ने संबंधित अधिकारियों को दिया। साथ ही पानी की समस्या के लिए पाइपलाइन विस्तार के लिए विभागों को निर्देशित भी किया। आवागमन में सुविधा हो इसके लिए यहां के लोगों ने सीसी सड़क की मांग की। महापौर ने सभी समस्याओं को सुनकर सभी के समाधान के लिए जल्द कार्यवाही करने का आश्वासन वार्डवासियों को दिया । निरीक्षण के दौरान एमआईसी सदस्य लक्ष्मण झा, पार्षद नेहा ध्रुव, लक्ष्मी कश्यप, वार्ड वासी सहित निगम अमला मौजूद रहा।

तेंदुपता घोटाला: गिरफ्तार डीएफओ को कोर्ट में किया गया पेश



रायपुर 28 अप्रैल। तेंदुपता बोनस घोटाले में गिरफ्तार डीएफओ को आज कोर्ट में पेश किया गया। तीन दिन की रिमांड खसम होने के बाद आज उन्हें विशेष अदालत में पेश किया गया। इससे पहले 17 अप्रैल को उनकी गिरफ्तारी हुई थी। तेंदुपता बोनस घोटाले में आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरो और भ्रष्टाचार निवारण ब्यूरो ने निर्लंबित अशोक कुमार पटेल को शनिवार को रायपुर की विशेष अदालत में पेश किया। पटेल को इससे पहले 26 अप्रैल तक रिमांड पर भेजा गया था। तेंदुपता बोनस घोटाला वर्ष 2021 और 2022 के तेंदूपत्ता सीजन से जुड़ा है। आरोप है कि सुकुमा वन मंडल के तहत काम करने वाले मजदूरों को जो बोनस राशि मिलनी थी, उसमें भारी हेराफेरी की गई। करीब 7 करोड़ रुपये की राशि मजदूरों को दी जानी थी, लेकिन अधिकारियों ने आपसी साटमांट कर इस राशि का एक बड़ा हिस्सा खुद रख लिया और संग्राहकों तक पैसा नहीं पहुंचा। 8 अप्रैल 2025 को इस मामले में दर्ज की गई थी। इसके बाद 10 अप्रैल को अशोक पटेल और उनके सहयोगियों के खिलाफ छापेमारी अभियान चलाया गया, जिसमें कई महत्वपूर्ण दस्तावेज और डिजिटल सबूत जब्त किए गए। यह मामला इसलिए भी विशेष महत्व रखता है क्योंकि साथ सरकार बनने के बाद पहली बार किसी आईएफएस अधिकारी को गिरफ्तार किया गया है। इस गिरफ्तारी ने पूरे प्रशासनिक अमले में हलचल मचा दी है और अन्य विभागों में भी सतर्कता बढ़ा दी गई है। अधिकारियों के अनुसार, जांच अभी जारी है और पूछताछ के दौरान कई अन्य नाम भी सामने आ सकते हैं। संभावना जताई जा रही है कि इस घोटाले में और भी अधिकारी व कर्मचारी शामिल हो सकते हैं, जिनकी भूमिका की गहन जांच की जा रही है। विशेष अदालत ने मामले की गंभीरता को देखते हुए पटेल की पुलिस रिमांड बढ़ाने पर विचार करने का संकेत दिया है।

जनचौपाल में जिला पंचायत अध्यक्ष मुड़ामी ने ग्रामीणों से किया सीधा संवाद



दंतेवाड़ा, 28 अप्रैल। दंतेवाड़ा जिले के जनपद पंचायत कुआकोंडा के अंतर्गत विभिन्न ग्राम पंचायतों में आज जनचौपाल सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष श्री नंदलाल मुड़ामी ने स्वयं उपस्थित होकर ग्रामीणों से सीधा संवाद स्थापित किया और केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा प्रचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। जनचौपाल के दौरान श्री मुड़ामी ने ग्रामीणों को शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने बताया कि सरकारी स्कूलों में गुणवत्ता सुधार, छात्रवृत्ति वितरण और डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार निरंतर प्रयास कर रही है। स्वास्थ्य के संबंध में उन्होंने ग्रामीणों को आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत पांच लाख रुपये तक के नि:शुल्क इलाज की सुविधा के बारे में अवगत कराया, साथ ही प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के सशक्तिकरण की जानकारी दी। पेयजल के मुद्दे पर श्री मुड़ामी ने बताया कि हर घर तक नल जल योजना के तहत शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के कार्य तीव्र गति से चल रहे हैं। कृषि के क्षेत्र में किसानों के लिए चलाई जा रही योजनाओं, जैसे कि जैविक खेती,फसल बीमा योजना और आधुनिक तकनीकों से खेती के लाभों को भी समझाया गया। जन चौपाल सभा को संबोधित करते हुए जनपद अध्यक्ष सुकाल मुड़ामी* ग्रामीणों को प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत आवासहीनों को पक्के मकान प्रदान करने के कार्यों की जानकारी दी गई और पात्र हितग्राहियों को 30 तरीख का आवेदन हेतु प्रेरित किया गया। महतारी वंदन योजना के तहत महिलाओं को दी जाने वाली आर्थिक सहायता के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया। पेंशन योजनाओं (वृद्धावस्था, विधवा, दिव्यांग पेंशन) के तहत मिलने वाले लाभ और उनके आवेदन की प्रक्रिया को भी ग्रामीणों को विस्तार से समझाया गया।

एक नजर

प्रथम नवसलमुक्त पंचायत बड़ेसेष्ट्री में तीनदिवसीय सुविधा शिविर आयोजित



सुकमा, 28 अप्रैल। जिले में माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में विभिन्न शासकीय योजनाओं एवं सुविधाओं से ग्रामीणों को शत प्रतिशत लाभान्वित करने के उद्देश्य से कलेक्टर श्री देवेश कुमार ध्रुव के निर्देशन और मार्गदर्शन में सुविधा शिविर का आयोजन किया गया। 25 अप्रैल से 27 अप्रैल को सुकुमा विकासखंड के ग्राम पंचायत बड़ेसेष्ट्री में सुविधा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के सफल क्रियाच्यपन हेतु अनुविभागीय अधिकारी (रा.) सुकुमा को नोडल अधिकारी एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जनपद पंचायत सुकुमा को सहायक नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। सुविधा शिविर में आधारकार्ड निर्माण, आयुष्मान कार्ड निर्माण, महात्मा गांधी रोजगार गारंटी योजना अंतर्गत जांब कार्ड निर्माण, प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, राशन कार्ड, वन अधिकार मान्यता प्रमाण पत्र, वोटर आईडी कार्ड, बैंक खाता खोलना, नवीन आवेदन की पेंशन स्वीकृति दिव्यांग प्रमाण पत्र, पेंशन का भुगतान से लाभान्वित करने के साथ ही राजस्व विभाग, स्वास्थ्य विभाग सहित अन्य विभागों द्वारा शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं के संबंध में ग्रामीणों को जानकारी उपलब्ध कराई गई।

कलेक्टर ने किया उा स्वास्थ्य केंद्र कोलाईगुड़ा का औचक निरीक्षण

सुकमा, 28 अप्रैल। कलेक्टर देवेश कुमार ध्रुव के द्वारा रविवार को कोटा विकासखंड के अंतर्गत उप स्वास्थ्य केंद्र कोलाईगुड़ा का औचक निरीक्षण किया गया। कलेक्टर ध्रुव ने उप स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण कर संस्थागत प्रसव से संबंधित जानकारी प्राप्त की। उन्होंने स्वास्थ्य केंद्र में मरीजों को मिलने वाली मूलभूत सुविधाओं के संबंध में आवश्यक जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने स्वास्थ्य केंद्र में साफसफाई और दवाओं की उपलब्धता का आि आवश्यक निर्देश दिए।

ऐतमानगर का आश्रित गांव लड़पखना बुनियादी सुविधाओं से अभी भी वंचित

कोरबा 28 अप्रैल। स्वाधीनता के 75 वर्ष पूरे होने पर देश अमृत काल का उत्सव मना रहा है लेकिन आदिवासी बाहुल्य कोरबा जिले में कई गांव ऐसे हैं जो जरूरी सुविधाओं के लिए तरस रहे हैं। एक तरह से यह उनके लिए विडंबना है। जिला मुख्यालय से महज 55 किलोमीटर दूर स्थित ऐतमानगर ग्राम पंचायत का आश्रित गांव ठाड़पखना बुनियादी सुविधाओं से अभी भी वंचित है। यहां के लोगों को इंतजार है कि कब कोई र्क्षि मिन यहां पहुंचे तो उनका भाग्योदय हो। सड़क, पानी और राशन जैसी मूलभूत जरूरतें यहां अब भी सपना बनी हुई हैं। गांव में न तो पक्की सड़कें हैं, न साफपानी की सुविधा, और न ही उचित मूल्य की राशन दुकान। लोगों ने बताया कि राशन लेने के लिए उन्हें या तो 10 किलोमीटर का लंबा और कठिन सफर तय करना पड़ता है या फिर अपनी जान जोखिम में डालते हुए नदी पार करनी पड़ती है। नदी पार करने के लिए गांव वालों के पास सिर्फ एक पुरानी नाव है, जो हर मौसम में सुरक्षित नहीं होती। अब तक इसी रास्ते में तीन ग्रामीणों की जान भी जा चुकी है, लेकिन फिर भी हालात जस के तस बने हुए हैं। पानी की समस्या भी ठाड़पखना में विकराल रूप ले चुकी है। गांव के एकमात्र हैंडपंप का पानी पीने लायक नहीं है, उसमें गुणवत्ता की कमी है और दूग्ध भी है। ग्रामीणों को पीने का पानी बागों बांध के डूब क्षेत्र से लाना पड़ता है, जो दूर भी है और जोखिम भरा भी।

■ कहा ओवरब्रिज बना तो पूरा आवराभाटा हो जाएगा समाप्त

■ व्यापारियों और रहवासियों में भय व्याप्त

■ सांसद और विधायक को ज्ञापन सौंप ओवरब्रिज की जगह अंडरब्रिज बनाने की रखी मांग

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

दंतेवाड़ा 28 अप्रैल। शहर के व्यापारियों और रहवासियों में ओवरब्रिज को लेकर भय और तनाव का वातावरण बना हुआ है।प्रभावितों द्वारा सांसद महेश कश्यप एवं विधायक चैतराम अटामी को ज्ञापन सौंप राष्ट्रीय राजमार्ग को गौदम से बंगावाड़ी बायपास में स्थानांतरित करने एवं आवाराभाटा रेलवे फाटक के पास अंडरब्रिज बनाने की मांग की गई है।ज्ञापन में प्रभावितों ने चिंता जताई है कि ओवरब्रिज का जो मानक है उसके जद्द में

इंद्रावती को मूल प्रवाह में लाने बस्तर सांसद ने ओडिशा के सांसद-विधायक के साथ बैठक की

■ दोनो राज्यों के सहयोग से इंद्रावती नदी मूल प्रवाह में शीघ्र बहेगी, इस ओर हम कार्य कर रहे हैं: महेश कश्यप

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

जगदलपुर, 28 अप्रैल। छत्तीसगढ़ में बस्तर की जीवनदायिनी कहे जाने वाली इंद्रावती नदी को ले कर बस्तर सांसद श्री महेश कश्यप एक्टिव मोड पर हैं। लगातार बस्तर सांसद इंद्रावती नदी के विषयों पर कार्य कर रहे हैं। विगत दिनों में सांसद श्री कश्यप के द्वारा बस्तर के इंद्रावती जल संकट मामले को लोकसभा में उठाया गया था,साथ ही जल्द इस मामले का निपटारा करने हेतु केंद्रीय जल शक्ति मंत्री से सांसद ने आग्रह किया था। छत्तीसगढ़ सरकार व बस्तर के जनप्रतिनिधियों के सहयोग से बस्तर को समझौते के मुताबिक जल मिलने लगा। जगदलपुर में छत्तीसगढ़ व ओडिशा राज्यों के जनप्रतिनिधियों सहित अधिकारियों



की बैठक में इंद्रावती नदी को वापस स्वरूप में लाने के लिए कार्ययोजना तैयार किया गया है। जगदलपुर सफ़िट हाऊस में बस्तर सांसद श्री महेश कश्यप व नवरांगपुर सांसद श्री बलभद्र मांझी व कोटपाड़ विधायक श्री रूपा भट्टरा सहित दोनो राज्यों के अधिकारियों की मौजूदगी में बैठक संपन्न हुई है। इस बैठक में जोरा नाला स्ट्रक्चर सहित अन्य कई विषयों पर चर्चा हुई। इस बैठक में इंद्रावती जल संकट मामले का प्रमुख कारण ओडिशा से इंद्रावती नदी के जल से हो रहे बिजली उत्पादन को बताया गया है। बस्तर सांसद श्री महेश कश्यप ने बताया कि जगदलपुर में

ओडिशा के सांसद व विधायक महोदय के साथ इंद्रावती सहित अन्य विषयों पर चर्चा हुई है। इस दौरान इंद्रावती नदी को वापस प्रवाह में लाने के लिए हमने ओडिशा राज्य के जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों के साथ बैठक में कई स्वरूप तैयार किया है। हमारे द्वारा कालाहांडी डैम के एक गेट को खुला रखने की मांग की है जिससे इंद्रावती के प्रवाह में कोई कमी ना हो पाये। वहीं ओडिशा - छत्तीसगढ़ की सीमा पर स्थित गाड़ाघाट पुलिया को ले कर भी चर्चा हुई है। गाड़ाघाट - तिरिया पुलिया जो को ओडिशा सरकार द्वारा बनाना प्रस्तावित है।

कांग्रेस किसानों के साथ मिलकर इंद्रावती बचाओ अभियान चलाएगी: सुशील

■ छ.ग.पीसीसी चीफ दीपक बैज के निर्देश में बस्तर संभाग सहित प्रदेश कांग्रेस के नेतागण व कार्यकर्ता भी इंद्रावती बचाओ अभियान में होंगे शामिल

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

जगदलपुर, 28 अप्रैल। आज भाजपा की डबल इंजन सरकार की जनविरोधी नीतियों के चलते बस्तर का लोकतांत्रिक अधिकार खतरे में व बस्तर की जीवनदायिनी इंद्रावती नदी सूखने के कगार पर है,जिसको लेकर आगामी 28

अप्रैल से कांग्रेस बस्तर के प्रभावित किसानों के साथ मिलकर इंद्रावती को बचाने हेतु बड़ी लड़ाई लड़ने को तैयार है..छत्तीसगढ़ पीसीसी चीफ दीपक बैज जी के निर्देश पर बस्तर संभाग सहित प्रदेश कांग्रेस के नेतागण व कार्यकर्ता भी चित्रकोट के लोहंडीगुड़ा से लेकर जगदलपुर तक का विशाल



पदयात्रा कर इंद्रावती के अस्तित्व को बचाने,किसानों के हुए फसल नुकसान हेतु मुआवजे,बस्तर में बढ़ते भीषण जलसंकट की मदद से जिला कलेक्टर के नेतृत्व में किया गया है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को और भी आकर्षक और प्रयोगात्मक बनाना है।

निरंकुश,जनविरोधी, पर्यावरण विरोधी, किसान विरोधी और कुभकर्णीय नींद में सोई भाजपा सरकार को जगाने का कार्य करेगी।

उक्त बातें बस्तर जिला कांग्रेस कमेटी शहर अध्यक्ष सुशील मौर्य ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से कही है। शहर अध्यक्ष सुशील मौर्य ने कहा भाजपा सरकार बस्तर की सुंदरता के साथ खिलवाड़ बस्तर के जल जंगल जमीन के साथ खिलवाड़ कर रही है..बस्तर के लोकतांत्रिक

मूल्यों को बचाने व उनके अधिकार के साथ बस्तर की जीवनदायिनी इंद्रावती नदी को बचाने समस्त सामाजिक संगठन, किसान,

राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हुआ दंतेवाड़ा साइंस सेंटर

■ मन की बात, आकाशवाणी कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी ने दंतेवाड़ा साइंस सेंटर का किया गौरवपूर्ण उद्घेख

■ ग्रामीण बच्चों की वैज्ञानिक मेधा को नया आयाम दे रहा है साइंस सेंटर

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

दंतेवाड़ा, 28 अप्रैल। को आकाशवाणी के मासिक कार्यक्रम मन की बात में देश के प्रधानमंत्री मोदी ने दंतेवाड़ा मुख्यालय स्थित



साइंस सेंटर का गौरवपूर्ण उद्घेख एवं विशेष सराहना करते हुए कहा कि आज भारत का युवा टेक्नोलॉजी और इनोवेशन की दिशा में बढ़ रहा है इस क्रम में छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले स्थित साइंस सेंटर ने सबका ध्यान आकर्षित किया है जो क्षेत्र पूर्व में हिंसा और अशांति के नाम से जाना



जाता था आज वहां शांति और विकास का नया सूर्योदय हुआ है वहां का युवा आज नई-नई टेक्नोलॉजी नई मशीनों नए प्रोडक्ट साथ ही और भी दूसरे इन्वोवेटिव जानकारी से लेस हो रहा है। उद्घेखनीय है किदंतेवाड़ा साइंस सेंटर को शिक्षा और तकनीक का एक नवीन केंद्र के रूप में विकसित किया

जा रहा है।जैसे स्कूल के बच्चों को विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में प्रेरित करने के उद्देश्य से बनाया गया है। इस साइंस सेंटर का निर्माण जिला परिषद की मदद से जिला कलेक्टर के नेतृत्व में किया गया है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को और भी आकर्षक और प्रयोगात्मक बनाना है।

थीम आधारित कमरे और प्रायोगिक अनुभव है

इस साइंस सेंटर में अलग-अलग थीम वाले कमरे बनाए गए हैं, जो बच्चों को विभिन्न विषयों को गहराई से समझने में मदद करेंगे। ये कक्ष उनके अनुभवात्मक ज्ञान को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।जिनमें से इंडस्ट्री रूम - जहां बच्चे औद्योगिक विकास की समयरेखा (Industrial Evolution Timeline) के माध्यम से उद्योगों के विकास को समझ सकते हैं। इसमें एक 3D प्रिंटर जोना भी होगा, जहां अलग-अलग प्रकार के तीन 3D प्रिंटर होंगे। साथ ही, डॉंग रोबोट, ह्यूमनॉइड रोबोट, स्पाइडर रोबोट, राइटिंग रोबोट और पाथ-ग्राइंडेड इंडस्ट्री रोबोट्स भी प्रदर्शित किए जाएंगे।इसी प्रकार फिजिक्स रूम में बच्चे भौतिकी के मूल सिद्धांतों को हैंड्स-ऑन प्रयोगों के माध्यम से सीख सकेंगे। इमर्सिव रूम में 360ए डिजिटल स्पेस होगा, जहां बच्चे वर्चुअल दुनिया का अनुभव ले सकते हैं। मिनीवर्ल्ड रूम में 8×4 फीट का HO स्केल ट्रेन मिनिएचर सेट होगा, जिसमें गांव और शहर दोनों के दृश्य दर्शाए जाएंगे।इसके अलावा हॉवैस्ट हब (फार्मिंग ज़ोन) - में विभिन्न कृषि तकनीकों का प्रदर्शन किया जाएगा, जो किसानों और विद्यार्थियों के लिए उपयोगी होगा।

एक

नजर

शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म, आरोपी गिरफ्तार

रायपुर, 28 अप्रैल। शादी का झांसा देकर होटल में युवती से दुष्कर्म करने का मामला प्रकाश में आया है। प्रार्थिया की शिकायत पर कोतवाली पुलिस ने आरोपी के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार बेमेतरा निवासी 20 वर्षीय प्रार्थिया ने थाना में शिकायत किया कि आरोपी दीपक धृतलहर 27 वर्ष प्रार्थिया के साथ होटल में काम करता था। इस दौरान आरोपी ने शादी का झांसा देकर प्रार्थिया को व्हाइट हाउस के पास होटल में ले जाकर शारीरिक संबंध बनाया। जिससे प्रार्थिया गर्भवती हो गई। जिसके बाद आरोपी शादी से इंकार कर दिया। प्रार्थिया की शिकायत पर कोतवाली पुलिस ने आरोपी के खिलाफ अपराध दर्ज कर हिरासत में लिया है।

खारुन नदी में डूबे दो युवकों में से एक का शव बरामद, दूसरे की तलाश जारी

रायपुर, 28 अप्रैल। राजधानी रायपुर के मुजगहन थाना क्षेत्र स्थित काड्डीह सात पाखर डैम के पास खारुन नदी में नहाने गए दो युवक डूब गए। रविवार को हुई इस दुःखद घटना में आज सुबह रेस्क्यू टीम को सफलता मिली, जब अर्जुन यादव का शव बरामद कर लिया गया। वहीं, दूसरे युवक भूपेश भूडे की तलाश एसडीआरएफ़टीम द्वारा लगातार की जा रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, अर्जुन यादव निवासी नवा रायपुर और भूपेश भूडे निवासी जोरा अपने दोस्तों के साथ रविवार को एनीकेट, पत्रकारिता कॉलेज के पास खारुन नदी में नहाने पहुंचे थे। इस दौरान एक युवक का पैर फिसल गया और वह पानी में डूबने लगा। दोस्त को बचाने की कोशिश में दूसरा युवक भी गहरे पानी में चला गया, जिससे दोनों डूब गए। घटना की सूचना मिलते ही डायल 112 और एसडीआरएफ़की टीम मौके पर पहुंची। आज सुबह रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान अर्जुन यादव का शव नदी से बाहर निकाला गया और स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया है। भूपेश की तलाश अब भी जारी है।

महन्त कॉलेज से निकली आक्रोश रैली

रायपुर, 27 अप्रैल। जम्मू कश्मीर के पहलगाम में पिछले दिनों पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले के विरोध में आज महंत लक्ष्मी नारायण दास महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा आक्रोश रैली निकाली गई इस रैली में 200 से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया रैली का आयोजन एल्यूमिनी संगठन के तत्वाधान में किया गया था जिसका नेतृत्व संगठन के अध्यक्ष प्रदीप साहू एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉक्टर देवाशीष मुखर्जी ने किया यह रैली महाविद्यालय सभागार में एकत्रित होक सर्वप्रथम सभी मृतपर्यटकों को श्रद्धांजलि दी गयी ततपश्चात रैली प्रारंभ होकर कोतवाली चौक होते हुए बुढ़ापारा चौक निगम उद्यान क्वाइट हाउस होते हुए वापस सभागार पहुंची इस दौरान छात्र-छात्राओं ने हिंदुस्तान अमर रहे पाकिस्तान मुर्दाबाद, आतंकवाद मुर्दाबाद के नारे लगाए तिरंगा झंडा लेकर चल रहे छात्र-छात्राओं में आतंकीयों की हकत पर सभी के चेहरे पर नाराजगी और गुस्सा था और आक्रोश दिखाई पड़ रहा था इससे पहले घटना में शहीद हुए लोगों को 2 मिनट का मौन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई श्रद्धांजलि सभा में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ देवाशीष मुखर्जी ने उपस्थित समुदाय को कहा कि यह एक बेहद संवेदनशील घटना है इसमें हम सभी को दुःख दिया है ऐसी समय में मृतक परिवारों के साथ महंत लक्ष्मी नारायण दास परिवार खड़ा है और आने वाले दिनों में प्रदेश और देश के अंदर सामाजिक समरसता और एकता बनाए रखने के लिए काम करता रहेगा एल्यूमिनी संगठन के प्रदीप साहू ने छात्र-छात्राओं से अपील करते हुए कहा की रैली में किसी तरह का मजाक वाली बातें ना हो सभी गंभीरता से तिरंगा झंडा के सम्मान के साथ शामिल होंगे रैली में बड़ी संख्या में छात्र छात्राये , महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकगन सहित अंकित शुक्ला, तरुण एवम अलमुनि के अन्य छात्र उपस्थित रहे।

मोदी सरकार और तेल कंपनियां जनता को लूट रही: दीपक बैज

रायपुर, 28 अप्रैल। केंद्र सरकार के संरक्षण में तेल कंपनियां जनता को लूट रही है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में क्रूड ऑयल के दाम के अनुपात में भारत में जिस रेट में पेट्रोल-डीजल बेचा जा रहा है पेट्रोलियम कंपनियां डीजल और पेट्रोल पर 16 रू. प्रति लीटर से अधिक का मुनाफा कमा रही है, मोदी सरकार 37 रू. का टैक्स ले रही है। दुर्भाग्यजनक है कि केंद्र सरकार ने पेट्रोल, डीजल पर मुनाफा कम करके आम आदमी को राहत देने के बजाय पेट्रोल, डीजल के दामों में और बढ़ोतरी कर दिया है। 5 साल में मोदी सरकार ने 35 लाख करोड़ पेट्रोल, डीजल पर टैक्स वसूला है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि एक तरफ जहां क्रूड ऑयल अंतरराष्ट्रीय मार्केट में ऐतिहासिक तौर पर न्यूनतम स्तर में आ गया है, दूसरी तरफ मोदी सरकार सेंट्रल एक्सहाइज में 2 रुपए की बढ़ोतरी करके जनता की जेब में डकैती कर अपनी तिजोरी भरने में लगी है। पिछले कुछ दिनों में अंतरराष्ट्रीय बाजार में क्रूड ऑयल 16 परसेंट घटा है।

नगर में पकड़े गए दो पाकिस्तानी नागरिक, फर्जी तरीके से बनवाया था मतदाता परिचय पत्र

■ **जुटमिल पुलिस ने कार्रवाई कर भेजा रिमांड पर**

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायगढ़, 28 अप्रैल। पुलिस अधीक्षक दिव्यांग पटेल के मार्गदर्शन में जिले में अवैध रूप से रह रहे नागरिकों के खिलाफ सख्त जांच अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में जुटमिल थाना प्रभारी निरीक्षक प्रशांत राव को आज सूचना मिली कि ग्राम कोडातराई में याक़ुब शेख के मकान में दो पाकिस्तानी नागरिक रह रहे हैं, जिन्होंने भारतीय नागरिकता

सबसे बड़ा नक्सल ऑपरेशन, 7वें दिन भी मुठभेड़ करेंगुट्टा जंगल में प्लांट बमों की खोज की जा रही



■ **तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता**

बीजापुर, 28 अप्रैल। बस्तर संभाग के बीजापुर जिले के उसूर थाना क्षेत्र में करंगुट्टा की पहाड़ी पर पिछले सात दिनों से सबसे बड़ा नक्सल ऑपरेशन चल रहा है। मंगलवार से शुरू हुए इस ऑपरेशन में

हजारों जवान शामिल है. लगभग 42 से 45 ड्रिग्री तापमान के बीच जवान इस ऑपरेशन को सफल बनाने में लगे हुए हैं. बस्तर आईजी सुंदरराज पी, डीआईजी कमलोजन करश्यप पूरे नक्सल ऑपरेशन पर निगरानी रखे हुए हैं. पुजारी कांकेर, नन्बी, गलगल के जंगलों में रुक रुककर मुठभेड़

हो रही है. सुरक्षाबल पुसगुप्पा और भीमराम के जंगलो मे भी तैनात है. इस बीच माओवादी शांतिवाता के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं. बीजापुर जिले से लगे करंगुट्टा की पहाड़ी पर नक्सल ऑपरेशन चल रहा है. बताया जा रहा है कि करंगुट्टा की पहाड़ी पर कई नक्सली लीडर और

9 सदस्यीय सर्वे टीम पहुंची तेलंगाना प्रवासित 134 परिवारों का किया सर्वे

■ **तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता**

बीजापुर, 28 अप्रैल। रामचन्द्रम एरोला - बस्तर कमिश्नर एवं कलेक्टर बीजापुर के निर्देशन मे संयुक्त कलेक्टर एवं नोडल अधिकारी जगेश्वर कोशल अनुविभागीय अधिकारी उसूर भूपेंद्र गावरे के मार्गदर्शन मे नायब तहसीलदार देवनन्दन सिंह टंडन की अगुवाई में मंडल संयोजक डिटी रंजर आरआई सहित राजस्व विभाग वन विभाग पंचायत विभाग के कर्मचारियों का 9 सदस्यीय सर्वे टीम बस्तर क्षेत्र के सीमावर्ती तेलंगाना एवं अन्य राज्यों मे प्रवासित परिवारों का पुनर्वास प्रयोजन हेतु तेलंगाना के विभिन्न क्षेत्रों मे वर्ष 2002-03, 2004-05 मे सलवा जुद्ध के दौरान किसी कारण गृहग्राम को



छोड़कर तेलंगाना मुलगू जिला के रायबंधम, कोडपुरम, कोंडई, एकनगुडा, रामचंद्रपुरम, एवं भद्रादीकोतागुडम के लक्ष्मी कॉलोनी, सिंगासमुद्रम, कोलाकमलापुरम, जाकर परिवार सहित बसे हैं और मजदूरी कर जीवन यापन कर

रहें हैं ऐसे परिवारों को वापस लाने के उद्देश्य से जिले की टीम उन ग्रामों मे पहुंचकर प्रवासित कुल 134 परिवारों का सर्वे कर जानकारी लिया एवं वर्तमान मे प्रदेश मे चल रही नियद नेछानार योजना से अवगत कराया गया।

जिला राजस्व पटवारी संघ के चुनाव में शंकर लाल कतलाम बने बीजापुर जिला अध्यक्ष

■ **उपाध्यक्ष प्रफुल्ल कुमार सलाम तो सचिव के. जी. यशवन्तराव बने**

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बीजापुर, 28 अप्रैल। जिला राजस्व पटवारी संघ ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर दी जानकारी अनुसार प्रांतीय निर्देशानुसार जिला राजस्व पटवारी संघ का चुनाव आज दिनांक 26 अप्रैल 2025 को पर्यवेक्षक ओम करश्यप जिला अध्यक्ष दत्तेवाड़ा की उपस्थिति में सम्पन्न कराया गया। जिसमें राजस्व पटवारी संघ जिला शाख द्वारा पर्यवेक्षक ओम करश्यप और तीन साथियों का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया स्वागत उपरांत छत्तीसगढ़ महतारी का पूजा अर्चना सम्पन्न करा कर चुनाव



प्रांतीय निर्देश अनुसार शान्तिपूर्ण सम्पन्न कराया गया। जिसमें अध्यक्ष के लिए तीन उम्मीदवारों ने उम्मीदवारी प्रस्तुत की 1. बीरा राजबाबू पटवारी उसूर तहसील 2. भानुप्रतापदेव चिडियम पटवारी तहसील बीजापुर एवं 3. शंकरलाल कतलाम तहसील गंगालूर से नामांकन दाखिल किया। चुनाव शांति पूर्वक सम्पन्न हुआ।

चुनाव में कुल 56 पटवारी मतदाताओं ने भाग लिया जिसमें खारिज मत 01 एवं विधिमान्य मतों की संख्या 55 बीरा राजबाबू को 23 मत प्राप्त हुए भानुप्रतापदेव चिडियम को 05 मत और शंकरलाल कतलाम को 27 मत प्राप्त हुए।

इस प्रकार शंकरलाल कतलाम 04 मतों से विजयी घोषित किए गए। जीते

विधायक योगेश्वर राजू सिन्हा ने भाजपा नेताओं के साथ सुनी प्रधानमंत्री मोदी के मन की बात

■ **तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता**

महासमुंद्र, 28 अप्रैल। रविवार को देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम के 12वें एपिसोड का प्रसारण हुआ। महासमुंद्र विधायक योगेश्वर राजू सिन्हा ने भाजपा नेताओं के साथ मन की बात कार्यक्रम का प्रसारण देखा। इस बार भी प्रधानमंत्री ने अलग-अलग क्षेत्रों व मुद्दों पर चर्चा की। इस दौरान भाजपा के वरिष्ठ नेता बंटी शर्मा, संदीप घोष, हरवंश सिंह मौजूद रहे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सबसे पहले कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले का जिक्र किया। उन्होंने कहा- इस आतंकी हमले के बाद पूरा देश एक स्वर में बोल रहा है। पूरे विश्व ने संवेदना प्रकट की है। पीड़ित परिजनों को न्याय जरूर मिलेगा। आगे कहा कि कश्मीर में शांति लौट रही थी,



स्कूल-कॉलेज अच्छे से चल रहे थे, निर्माण कार्यों में गति आई थी, लोकतंत्र मजबूत हो रहा था, पर्यटकों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही थी, लोगों की कमाई बढ़ रही थी, युवाओं के लिए नए अवसर तैयार हो रहे थे, लेकिन जम्मू-कश्मीर के दूरमनों को ये रास नहीं आया। इसके साथ ही उन्होंने देश को ग्लोबल सेस पॉवर बनाने की बात भी कही। पूर्व इसरो प्रमुख डॉ. कस्तूरीरंगन को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि आज भारत जिन उपग्रहों का उपयोग करता है,

उनमें से कई डॉ. कस्तूरीरंगन की देखरेख में लॉन्च की गई थी। उनका व्यक्तित्व खास था और युवा पीढ़ी उनके कार्यों से बहुत कुछ सीख सकती है। नया सीखने, जानने और कुछ नया करने का उनका दृष्टिकोण प्रेरणादायक था। **देश के युवाओं एवं अन्य विषयों पर भी बात-** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत के युवाओं ने भारत के प्रति दुनिया का नजरिया बदल दिया है। भारत का युवा, साईंस और इनोवेशन की ओर बढ़ रहा है। साथ ही कहा कि भारत ने अपने स्पेस सेक्टर को ब्रांडेड सेक्टर के लिए भी खोल दिया है। आज बहुत से युवा स्पेस स्टार्टअप में नए झंडे लहरा रहे हैं। इसके अलावा उन्होंने म्यांमार के लिए ऑपरेशन ब्रह्मा, अफ्रीका के बीमार बच्चों का भारत में इलाज, मोबाइल एप सचेत और एक पेड़ मां के नाम अभियान को भी बात की।

नक्सली सदस्य मौजूद है. इसकी सूचना मिलने के बाद छत्तीसगढ़ से सीआरपीएफ, डीआरजी, एसटीएफ, कोबरा और तेलंगाना से ग्रे हाउंड, महाराष्ट्र से ट्ट 60 के जवान इस बड़े नक्सल ऑपरेशन पर निकले. करंगुट्टा की पहाड़ी 290 किलोमीटर लंबी है. जो कई छोटी पहाड़ियों की रेंज है. करंगुट्टा की पहाड़ी छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और तेलंगाना में फैली हुई है. छत्तीसगढ़ में ही यह कांकेर से बीजापुर तक फैली हुई है.

जानकारी मिली है कि नक्सलियों के टॉप कमांडर हिडमा और देवा भी इसी पहाड़ी पर मौजूद है. ये पूरा इलाका पीएलजीए के बटलियन नंबर 1 का बेस इलाका माना जाता है और नक्सलियों का सबस मजबूत गढ़ है. करंगुट्टा में 100 से ज्यादा दृढश्रष्ट प्लांट की सूचना- इस नक्सल ऑपरेशन में एक तरफ जवान नक्सलियों से मोर्चा संभाल रहे हैं तो दूसरी तरफ जवानों की कई टुकड़ी डीमाईनिंग में लगी है. जवानों को निशाना बनाने नक्सलियों ने 100 से ज्यादा आईईडी प्लांट किए हैं, जिसकी खोज की जा रही है.

नामांतरण प्रक्रिया बदलने से भूमि विवाद और बढ़ेगे

रायपुर 28 अप्रैल। कांग्रेस संचार प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला सरकार द्वारा भूमि नामांतरण प्रक्रिया को बदले जाने पर कहा की प्रदेश कांग्रेस कमेट्री संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा है कि भू माफियाओं को लाभ पहुंचाने साथ सरकार ने नामांतरण का पूरा सिस्टम उप पंजीयकों के हाथ में सौंप दिया है। कोई तहसील जांच नहीं कर पाएगा, किसी ग्रामसभा के प्रस्ताव की आवश्यकता नहीं होगी, जमीन के असल मालिक को खबर तक नहीं होगी, कोई रुकावट नहीं होगा और भू माफियाओं को जमीन हड़पने का आसान रास्ता मिल जाएगा। इससे राजस्व के प्रकरण का विवाद और अधिक बढ़ने वाला है।

प्रत्याशी को पर्यवेक्षक के द्वारा प्रमाण पत्र दिया गया। जिला अध्यक्ष शंकरलाल कतलाम ने अपने कार्यकारिणी का घोषणा किया जिसमें जिला उपाध्यक्ष प्रफुल्ल कुमार सलाम सचिव के. जी. यशवन्तराव सहसचिव मनीषा नागेश कोषाध्यक्ष हितेन्द्र पाम्मोई उप कोषाध्यक्ष रेणुका गौतम संगठन मंत्री श्रवण कुमार गुप्ता महामंत्री रमेश मंडी प्रचारमंत्री संतोष तलाण्डी मोडिया प्रभारी बीरा राजबाबू सलाहकार जीवन सिंह कुन्जाम और पी.एस. ठाकुर बनाए गए। अन्त में जिला अध्यक्ष शंकरलाल कतलाम ने सभी का आभार तीसरी पारी के लिए जताया और सबको साथ लेकर चलने और सबकी समस्याओं को प्रशासन और शासन तक पहुंचाकर लाभ दिलाने की बात कहीं और धन्यवाद ज्ञापित किया ।

राष्ट्रीय ग्राम स्वराज: सविदा पदों पर भर्ती के लिए आवेदन आमंत्रित

महासमुंद्र, 28 अप्रैल। पंचायत संचालनालय के अंगरत रिवामेड राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान योजना के तहत छत्तीसगढ़ सिविल सेवा (सविदा नियुक्ति) निगम 2012 एवं संबंधित मार्गदर्शिकाओं के अनुसार सविदा आधार पर विभिन्न पदों पर भर्ती के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। जिसमें जिला समन्वयक, संकाय सदस्य एवं लेखापाल के एक- एक पद शामिल है। योग्य एवं इच्छुक अभ्यर्थी अपना आवेदन पत्र सायं 5:00 बजे तक केवल पंजीकृत डाक या स्मोड पोस्ट के माध्यम से मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत महासमुंद्र (छ.ग.) के नाम पर भेज सकते हैं। आवेदन व्यक्तिगत रूप से, ई-मेल या अन्य किसी इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से स्वीकार नहीं किए जाएंगे।



गोपाल मोदी बने कोरबा भाजपा जिलाध्यक्ष,भाजपा में हर्ष की लहर

खरसिया, 28 अप्रैल। कोरबा जिले में भाजपा की बढ़ रही गुटबाजी एवं अनुशासनहीनता पर अंकुश लगाने एवं कोरबा लोकसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी की लगातार हार को देखते हुए प्रदेश भाजपा ने तीन महीने पहले ही नियुक्त किए गए जिलाध्यक्ष मनोज शर्मा को तत्काल प्रभाव से हटाते हुए भाजपा के कड़ावर युवा नेता सर्वसमाज में लोकप्रिय अग्रवाल समाज के पूर्व अध्यक्ष व पूर्व गृहमंत्री ननकीराम कंवक के खासम-खास एवं केबिनेट मंत्री लखनलाल देवांगन सहित भाजपा के सभी गुटों से समन्वय बनाकर चलने में माहिर गोपाल मोदी को आधिकार भाजपा हाईकमान ने जिले की बागडोर सौंप दी दी। इनकी नेतृत्व क्षमता को देखते हुए लोकसभा चुनाव से पूर्व ही इन्हें जिलाध्यक्ष बनाए जाने की चर्चा जोरों पर थी किंतु गुटबाजी का शिकार होने के कारण इन्हें यह दायित्व नहीं सौंपा जा सका परिणाम स्वरूप पूरे छत्तीसगढ़ में मोदी लहर के बावजूद कोरबा लोकसभा से कांग्रेस प्रत्याशी श्रीमती ज्योत्सना महंत चुनाव जीतने में सफल रही। श्री गोपाल मोदी के भाजपा जिलाध्यक्ष बनने से पार्टी कार्यकर्ताओं में अपार उत्साह एवं जोश का संचार हुआ है। ग्राम पंचायत स्तर पर भाजपा कार्यकर्ताओं से इनके जमीनी संपर्क का लाभ संगठन को मिलेगा। साथ ही कोरबा नगर निगम चुनाव पश्चात की घटनाओं को लेकर भाजपा से खिसक रहा अग्रवाल एवं व्यापारी वोट पुनः भाजपा के पाले में आसकेगा ऐसी उम्मीद की जा रही है। देरना है हाईकमान की अपेक्षाओं पर गोपाल मोदी कितने खरे उतरते है एवं कोरबा निगम चुनाव पश्चात से बिखरे हुए भाजपा संगठन को एकजुट रखने में कितने सफल होते है। जिलाध्यक्ष पद पर गोपाल मोदी की नियुक्ति का समाचार आते ही कोरबा में जगह-जगह पटाखे फोड़े गए तथा मिठाइयां बांटी गई एवं दर रात तक इनके निवास स्थान पर भाजपा कार्यकर्ताओं का हजूम देखने लायक रहा।

रायगढ़ जिले के नवपदस्थ कलेक्टर मयंक चतुर्वेदी ने किया पदभार ग्रहण

रायगढ़, 28 अप्रैल। रायगढ़ जिले के नवपदस्थ कलेक्टर श्री मयंक चतुर्वेदी ने आज कलेक्टरेट में जिले के 51 वें कलेक्टर के रूप में पदभार ग्रहण किया। इस अवसर पर सीईओ जिला पंचायत श्री जितेन्द्र यादव, अपर कलेक्टर श्री अपूर्व प्रियेश टोप्पो, अपर कलेक्टर श्री रवि राही सहित जिले के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। कलेक्टर मयंक चतुर्वेदी भारतीय प्रशासनिक सेवा के 2017 बैच के अधिकारी हैं। इसके पूर्व वे कलेक्टर दत्तेवाड़ा, सीईओ जिला पंचायत धमतरी व नगर निगम आयुक्त रायपुर के पद पर पदस्थ रहे हैं। पदभार

ग्रहण करने के पश्चात कलेक्टर श्री मयंक चतुर्वेदी ने कलेक्ट्रेट भवन का भ्रमण कर कार्यालयों का निरीक्षण किया।

कोतवाली पुलिस ने 53 संदिग्धों की जांच कर सभी पर प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की



रायगढ़, 25 अप्रैल। पुलिस अधीक्षक श्री दिव्यांग कुमार पटेल के निर्देशानुसार रायगढ़ जिले में अवैध रूप से निवासरत बाहरी व्यक्तियों पर लगातार कार्रवाई जारी है। इसी क्रम में आज कोतवाली पुलिस ने बड़ा अभियान चलाया और क्षेत्र में बिना सूचना रह रहे दर्जनों लोगों पर शिकंजा कसा। थाना प्रभारी निरीक्षक सुखनंदन पटेल के नेतृत्व में उप निरीक्षक पेंतु देवांगन, उप निरीक्षक मनीष कांत तथा हमराह पुलिस बल ने चांदनी चौक, गंगाराम तालाब इंदिरा नगर इलाकों में घेराबंदी कर सघन जांच अभियान चलाया। सूचना के मुताबिक, इन क्षेत्रों में बड़ी संख्या में दूसरे प्रांतों के लोग चुपचाप रह रहे थे।

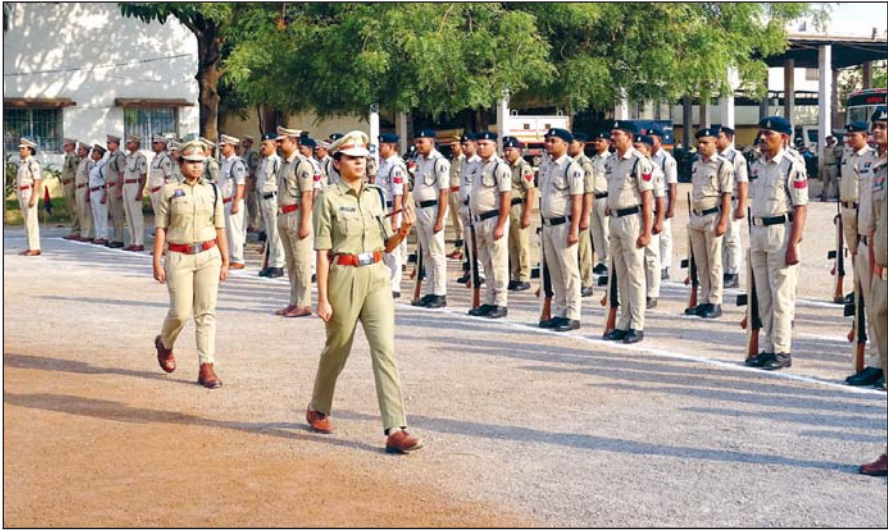
गौ माता की सेवा से बड़ा कोई पुण्य नहीं: आचार्य नरेंद्र नयन



महासमुंद्र, 28 अप्रैल। श्रीमद् भागवत कथा के 5वें दिन आज भगवताचार्य नरेंद्र नयन शास्त्री (चाय वाले बाबा) रिलयारी धाम ने भक्तों को भगवान श्रीकृष्ण के बाल लीलाओं का श्रवण कराया। उन्होंने कंस द्वारा भेजे गए अनेक राक्षसों का वध किया। बीटीआई रोड स्थित खैरा बाड़ा में श्रीमती उषा कमलनारायण चंद्राकर, शिल्पा सपन चंद्राकर परिवार द्वारा आयोजित श्रीमद् भागवत कथा के दौरान आचार्य शास्त्री ने गाय की महिमा का बखान किया। उन्होंने बताया कि गाय में 33 कोटि देवी-देवताओं का वास माना जाता है, इसलिए गौ माता की सेवा करने से सभी देवी-देवता प्रसन्न होते हैं। उन्होंने कहा कि गौ माता की सेवा करने से सभी धर्मों, सभी देवताओं की पूजा के बराबर फल मिलता है। आचार्य श्री शास्त्री ने पुतला वध कथा का वर्णन करते हुए कहा कि जाँक रहे भगवान जैसी प्रभु मूर्त देखीं तिन तैसी...। पुतना राक्षसी प्रभु के वामन अवतार के समय राजा बलि की पुत्री थीं। भगवान ने तीन पाम में तीनों लोकों को नाप लिया था। वहां राजा बलि की बेटी भी उपस्थित थीं। उसने मन में सोचा कि यदि यह मेरा पुत्र होता तो दुध में विष मिलाकर इसे मार देती। प्रभु ने उसके मन की ईच्छा को पूर्ण किया और द्वारप युग में पुतना राक्षसी का दूध पीकर उसे मुक्ति दी। भगवान ने पुतना को माता का सज्ञा दिया। आज कथा के दौरान सैकड़ों माताएं-बहनें, पुरुष उपस्थित थे।

पुलिस अधीक्षक भावना गुप्ता ने ली जनरल परेड, जवानों को उच्च कोटि की वेशभूषा धारण करने के लिए निर्देश

परेड में बेहतर टर्न आउट प्रस्तुत करने वाले स्टाफ को मिला इनाम



■ **वाहनों का निरीक्षण कर उनके बेहतर रखरखाव के लिए दिया उचित दिशा-निर्देश**

■ **तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता**

बलौदाबाजार, 28 अप्रैल। पुलिस अधीक्षक भावना गुप्ता द्वारा पुलिस लाइन बलौदाबाजार में समस्त पुलिस जवानों का जनरल परेड लिया गया। इस दौरान उन्होंने परेड की सलामी ली एवं परेड का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा परेड का मुख्य उद्देश्य है पुलिस जवानों में अनुशासन की भावना पैदा करना है।

परेड के दौरान पुलिस जवानों को उच्च कोटि का टर्न आउट धारण करने के संबंध में विशेष रूप से हिदायत दिया गया। आगामी कानून व्यवस्था, लाइन आर्डर ड्यूटी को दृष्टिगत रखते हुए सजाय रहकर ड्यूटी करने हेतु निर्देश दिया गया। इस दौरान भावना गुप्ता परेड में उपस्थित समस्त पुलिस अधिकारी/कर्मचारियों का सुक्ष्म निरीक्षण किया गया। साथ ही उनके द्वारा उच्च कोटि का टर्न आउट धारण करने वाले पुलिस स्टाफ को इनाम दिया गया। साथ ही परेड के दौरान पुलिस लाइन एवं जिले के विभिन्न थाना चौकी के वाहनों का निरीक्षण किया गया। इस दौरान

पुलिस अधीक्षक द्वारा समस्त वाहनों के बेहतर रखरखाव हेतु संबंधित अधिकारियों को उचित दिशा निर्देश दिया गया।

परेड में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बलौदाबाजार अधीक्षक सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भाटापारा हेमसागर सिदार, एसडीओपी भाटापारा तोरेश साहू, उप पुलिस अधीक्षक अजाक अपूर्वा क्षत्रिय, उप पुलिस अधीक्षक साइबर तुलसी लेकाम, उप पुलिस अधीक्षक मुख्यालय राजेश श्रीवास्तव, रक्षित निरीक्षक उषा ठाकुर सहित 199 की संख्या में पुलिस अधिकारी, कर्मचारी जनरल परेड में सम्मिलित हुए।

एक नजर

बलौदाबाजार से स्कूटी चोरी करने वाला गिरफ्तार



बलौदाबाजार, 28 अप्रैल (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। 30 मार्च को प्रार्थी हेमंत वर्मा निवासी मंगलम कॉलोनी बलौदाबाजार द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराया गया कि उसके पिताजी के नाम से पंजीकृत हीरो कंपनी स्कूटी क्र CG23HS16S को 24 मार्च के शाम 6:30 बजे से रात्रि 10:00 बजे के मध्य घर के बगल से कोई अज्ञात चोर द्वारा चोरी कर ले गया है, कि रिपोर्ट पर थाना सिटी कोतवाली में अपराध क्र. 315/2025 धारा 303(2) , 336(2) बीएनएस का प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। प्रकरण में पुलिस अधीक्षक भावना गुप्ता के कुशल निर्देशन में थाना सिटी कोतवाली पुलिस द्वारा आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज के अवलोकन एवं मुखबिर सूचना के आधार पर आरोपी लालू प्रसाद धृतलहरे को हिरासत में लिया गया, जिससे पृष्ठछाछ करने पर आरोपी द्वारा उक्त स्कूटी को चोरी कर, उसका नंबर प्लेट एवं स्कूटी गाड़ी के कुछ-कुछ चीजों को परिवर्तन कर, उसे छुपाकर रखना स्वीकार किया गया। आरोपी की निशानदेही पर चोरी का स्कूटी बरामद किया गया है। कि आरोपी को 25 अप्रैल को वधिवात गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करने की प्रक्रिया की जा रही है। आरोपी का नाम लालू प्रसाद धृतलहरे उम्र 26 वर्ष निवासी ग्राम छुहूँह (रैयतवारी) थाना सिटी कोतवाली है।

जन्मजात विकृति से पीड़ित बच्चों के लिए चिरायु बना वरदान

बलौदाबाजार, 28 अप्रैल (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। जिले में राष्ट्रीय बाल सुरक्षा कार्यक्रम के तहत स्कूलों एवं आगनबाड़ी केंद्रों में स्वास्थ्य परीक्षण कर चिरायु की टीम के द्वारा बच्चों का बेहतर इलाज कराया जा रहा है। बेहतर इलाज होने से जन्मजात विकृति से पीड़ित बच्चों के लिए चिरायु योजना वरदान साबित हो रहा है। भाटापारा खण्ड चिकित्सा अधिकारी डॉ. राजेन्द्र माहेश्वरी ने बताया कि विकासखण्ड भाटापारा के ग्राम तरंगा की 13 वर्षीय बालिका भारती यदु को जन्म से ही क्लेफ्ट पैलेट की समस्या थी। बच्ची के पिता रजवा यदु जो मजदूरी करते हैं उन्होंने बताया कि, इस जन्मजात रोग के कारण बच्ची के मुँह के तालू में छिद्र था जिसके कारण बच्ची को खाने, बोलने में असुविधा होती थी। डॉक्टर ने बताया कि बच्ची को देखने के बाद उसे रायपुर के निजी अस्पताल भेजा गया जहाँ ऑपरेशन के माध्यम से उपचार हुआ। यह उपचार पूरी तरह से निःशुल्क हुआ है। इसी तरह पलारी खण्ड चिकित्सा अधिकारी डॉ. बी.एस. ध्रुव ने बताया कि पलारी विकासखण्ड के ग्राम कोसमंदा के 12 वर्षीय बालक मोरध्वज कन्नौजे को जन्म से ही हृदय दोष था। जिसके तहत हृदय में संरचनात्मक असमानताएँ विकसित हो जाती हैं जो हृदय की दीवारों, वाल्वों को प्रभावित करता है जिससे सामान्य रक्त परिवहन बाधित हो जाता है।

शैक्षणिक भ्रमण योजना : राजधानी पहुंचे पीएमश्री स्कूल कसडोल के छात्र-छात्राएं

विद्यार्थियों ने देखा विज्ञान केन्द्र, मुक्तांगन और उठाया जंगल सफारी का लुत्फ भी

■ **तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता**

कसडोल/सोनाखान, 28 अप्रैल। नगर पंचायत कसडोल में संचालित पीएमश्री गुरु घासीदास शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के द्वारा शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के छात्र छात्राओं को छत्तीसगढ़ के रायपुर में स्थित विज्ञान सेंटर और जंगल सफरी का भ्रमण के लिए ले जाया गया। जिसमें उन्हें सर्वप्रथम विज्ञान सेंटर ले जाया गया जहां उन्होंने हर प्रकार की विज्ञान, भूगोल , भौतिकी, छत्तीसगढ़ संस्कृति से संबंधित विभिन्न प्रकार के संसाधनों के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी प्राप्त किया। इसके साथ ही यहाँ पर तारामंडल एनीमेशन वीडियो के द्वारा ग्रह-नक्षत्रों और सूर्य ग्रहण चांद ग्रहण के बारे में जानकारी प्राप्त किया उसके बाद सभी बच्चों ने 3 -डी शो के माध्यम से अंतरिक्ष यात्रा के बारे में जानकारी प्राप्त किया कि किस तरह से वैज्ञानिक अंतरिक्ष में कार्य करते है।

आपको बता दे केंद्र सरकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु पीएम श्री स्कूल का शुभारम्भ किया गया है यह एक महत्वपूर्ण योजना है इसी योजना के तहत सभी छात्रों को अत्याधुनिक शिक्षा प्राप्ति होती है। इसी योजना सभी छात्रों को प्रति वर्ष शैक्षणिक भ्रमण ले जाना होता है ताकि सभी छात्र छात्राओं को हर प्रकार



की जानकारी मिल सके। विज्ञान भवन में अनेक प्रकार की मॉडल जैसे कटुसर गुफ, अनंत कुआं, आलसी सिक्का, रिंग का भ्रम, थाली पर सिर, जाडूई पानी का नल, तैरती गेंद, दर्पण भूलभुलैया जैसे कई आकर्षण केंद्र है। इसके बाद दोपहर में सभी बच्चो को जंगल सफरी ले जाया गया । जहां उन्होंने विभिन्न प्रकार के

जंगली जानवरों को देखकर आनंदित हुए। आपको बता दें कि जंगल सफरी नंदनवन जंगल सफरी का पूरा 800 एकड़ क्षेत्र हरियाली से भरपूर है, जिसमें खूबसूरत परिदृश्य हैं। कई देशी पौधों की प्रजातियाँ भी वनस्पति में शामिल होती हैं, जो जानवरों के लिए एक प्राकृतिक आवास लबनाती हैं। जिसमें कई प्रवासी

पक्षी प्रजातियों को आकर्षित करता है। इस सफरी में स्पेफ्ट टाइगर , बाघ , चीतल ,सांभर, नीलगाय, हिरण, काला हिरण और भालू स्थित हैं। इस शैक्षणिक कार्यक्रम को सफल बनाने में मुख्य रूप से पीएमश्री स्कूल के प्राचार्य संतोष कुमार वर्मा और समस्त शिक्षकों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत माता सैनिक फिजिकल एकेडमी दे रहा निःशुल्क प्रशिक्षण

जिला प्रशासन के सहयोग से एकेडमी को मिली कई ट्रेनिंग



■ **तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता**

बलौदाबाजार, 28 अप्रैल। अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद जिला बलौदा बाजार -भाटापारा द्वारा

भारत माता सैनिक फिजिकल एकेडमी निः शुल्क प्रशिक्षण केंद्र का संचालन किया जा रहा है।भाटापारा के रावणभाटा दशहरा मैदान में संचालित यह प्रशिक्षण केंद्र जिले का एक मात्र

निःशुल्क फिजिकल ट्रेनिंग सेंटर है जहां पूर्व सैनिकों द्वारा अग्निवीर, नेवी, एयर फोर्स, पुलिस, एसएससी और रेलवे में भर्ती के लिए ट्रेनिंग दिया जाता है। कलेक्टर दीपक

कलेक्टर ने ली नोडल अधिकारियों की ऑनलाइन बैठक

ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल और निस्तारी व्यवस्था दुरुस्त करने के निर्देश

■ **तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता**

बलौदाबाजार, 28 अप्रैल। कलेक्टर दीपक सोनी ने शुक्रवार को ग्राम पंचायतों में नियुक्त जल संसाधन एवं लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के नोडल अधिकारियों की ऑनलाइन बैठक ली।उन्होंने नोडल अधिकारियों को निर्देशित किया कि अपने कलस्टर पंचायत एवं कलस्टर अंतर्गत पंचायतों में पेयजल एवं निस्तारी में कोई समस्या नहीं आनी चाहिए। कलस्टर ग्राम संसाधन विभाग जल संरचनाओं में गैर मरम्मत का लक्ष्य, तालाब जलाशय का भराव, नहर लाइनिंग मरम्मत कार्य एवं ग्रामीणों के साथ नहर का निरीक्षण करें। इसमें साथ ही वर्षा जल संरक्षण के लिए आवश्यक संरचना निर्माण हेतु उपयुक्त स्थल का चिन्हंकन करें। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग जल जीवन



मिशन सहित, हैंड पंप, सिंगल फेज पंप, निजी नलकूप, स्कूल के बोरे एवं टैंकर की व्यवस्था से पेयजल की समस्या दूर करें।

कलेक्टर ने कहा कि जल संचयन को लेकर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय द्वारा मोर गांव, मोर पानी महाभियान का शुभारम्भ किया गया है। जिले में चल रहे जल संचयन महाभियान को भी उक्त अभियान में समाहित करते हुए कार्य करना है। नल कूपों के पास सोखता गड्ढा निर्माण के साथ ही पक्के घरों में वाटर हार्वैस्टिंग सिस्टम बनवाने लोगों को प्रोत्साहित करें। इस दौरान सम्पर्क केंद्र में सीईओ जिला पंचायत सुश्री दिव्या अग्रवाल सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।



बलौदाबाजार, 28 अप्रैल (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। जल संचयन महाअभियान के तहत शुक्रवार को जिले के समस्त ग्राम पंचायतों में जल संचयन वाहिनी एवं स्वच्छता दीर्घियों द्वारा जल संरक्षण शपथ समारोह का आयोजन किया गया। इसमें जल संचयन वाहिनी एवं स्वच्छता दीर्घियों सहित ग्रामवासियों को निर्देशानुसार जिले में जल संचयन महाभियान चलाया जा रहा है जिसके तहत जल के सदुपयोग और जल संचयन के प्रति लोगों का जागरूक करने के साथ ही अधिकारी, कर्मचारी, स्व सहायता समूह एवं आमजनो की सहभागिता से विभिन्न कार्य किये जा रहे हैं। समूह की महिलाओ को जल संचयन वाहिनी की जिम्मेदारी दी गई है जो दीवाल लेखन, रैली, संगोष्ठी के माध्यम से ग्रामवासियों को महाभियान के प्रति जागरूक कर रहे हैं।

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) डोंगरगढ़, जिला राजनांदगांव, (छ.ग.)
रा.प्र.क्र. 202504092100023
अ/6 वर्ष 2024-25

ईशतहार

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है आवेदक गुरमिणश कोर भाटिया वन्द कंवलजीत सिंह भाटिया जाति सिक्ख उम्र 28 वर्ष निवासी सुरभि चौक वाई नं. 04 देवरी पो. व थाना व तहसील देवरी जिला-गोंदिया महाराष्ट्र द्वारा आवेदन पेश किया है कि विक्रेता हल्लीन कोर भाटिया पति गुरमोत सिंह भाटिया जाति सिक्ख उम्र 38 वर्ष निवासी राजेन्द्र वाई नं. 13 डोंगरगढ़ तहसील डोंगरगढ़ जिला-राजनांदगांव छ.ग. के अधिकार एवं आधिपत्य की भूमि नजुल शहर भाटिया कोर भाटिया वन्द कंवलजीत सिंह भाटिया जाति सिक्ख उम्र 28 वर्ष निवासी सुरभि चौक वाई नं. 04 देवरी पो. व थाना व तहसील देवरी जिला-गोंदिया मह. के पक्ष में उ पंजीकृत कार्यालय डोंगरगढ़ में विक्रय पत्र के माध्यम से पंजीयन कराया गया है जिसका पुस्तक क्रमांक 1 ग्रंथ क्रमांक 3118 में पृष्ठ 310 से 330 तक विलेख क्रमांक CG-2024-25-127-1-1580 पंजीयन दिनांक 20/12/2024 को पंजीबद्ध है। क्रय की भूमि पंजीयन का नामांतरण कर विक्रेता का नाम विलोपीत कर आवेदक का नाम दर्ज किये जाने का निवेदन किया है। आवेदक द्वारा आवेदन पत्र के साथ तलवाना, विक्रयपत्र की छयाप्रति पेश किया है।

अतएव उक्त भूमि के नामांतरण किये जाने में किसी को कोई दावा, उत्तर आपति हो तो वह पेशी दिनांक 21/05/2025 तक स्वयं उपस्थित होकर इस न्यायालय में मेरे समक्ष पेश कर सकते है, नियत अवधि बाद प्राप्त आपति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 22/04/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुहर से जारी किया गया।

अनुविभागीय अधिकारी (रा.) डोंगरगढ़ (छ.ग.)

मुहर

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) डोंगरगढ़, जिला राजनांदगांव, (छ.ग.)
रा.प्र.क्र. 202504092100019
अ/6 वर्ष 2024-25

ईशतहार

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है आवेदक गुरमचन कोर पति जसबीर सिंह भाटिया जाति सिक्ख उम्र 70 वर्ष निवासी बुधधारीगारा वाई नं. 15 डोंगरगढ़ तहसील डोंगरगढ़ जिला-राज. द्वारा आवेदन पेश किया है कि विक्रेतागणों के अधिकार एवं आधिपत्य की भूमि नजूल शहर पेले वाई नं. 14 डोंगरगढ़ में स्थित भूखण्ड क्रमांक 1811/33 अ क्षेत्रफल 900 वर्गफुट, शीट क्रमांक 6 लगाना 2.25 पैसा है, जिसे विक्रेता के द्वारा विधिपत्र मुझ क्रेता गुरमचन कोर पति जसबीर सिंह भाटिया जाति सिक्ख उम्र 70 वर्ष निवासी बुधधारीगारा वाई नं. 15 डोंगरगढ़ तहसील डोंगरगढ़ जिला-राज. के पक्ष में उप पंजीकृत कार्यालय डोंगरगढ़ में विक्रय पत्र के माध्यम से पंजीयन कराया गया है जिसका पुस्तक क्रमांक 1 ग्रंथ क्रमांक 3053 में पृष्ठ 27 से 44 तक विलेख क्रमांक CG-2024-25-127-1-122 पंजीयन दिनांक 22/04/2024 को पंजीबद्ध है। क्रय की भूमि पंजीयन का नामांतरण कर विक्रेतागणों का नाम विलोपित कर आवेदक का नाम दर्ज किये जाने का निवेदन किया है। आवेदक द्वारा आवेदन पत्र के साथ तलवाना, विक्रयपत्र की छयाप्रति पेश किया है।

अतएव उक्त भूमि के नामांतरण किये जाने में किसी को कोई दावा, उत्तर आपति हो तो वह पेशी दिनांक 30/04/2025 तक स्वयं उपस्थित होकर इस न्यायालय में मेरे समक्ष पेश कर सकते हैं, नियत अवधि बाद प्राप्त आपति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 11/04/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुहर से जारी किया गया।

अनुविभागीय अधिकारी (रा.) डोंगरगढ़ (छ.ग.)

मुहर

समाचार संक्षेप

बिना अनुमति के बोर खनन पर राजस्व टीम ने की कार्रवाई, बोर वाहन जब्त

■ **तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता**

बलौदाबाजार, 28 अप्रैल। कलेक्टर दीपक सोनी के निर्देशानुसार जिले में बिना अनुमति के अवैध बोर खनन पर कड़ी कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में रविवार को तहसील पलारी के ग्राम दतरंगी में बिना अनुमति के बोर खनन करते पाए जाने पर राजस्व विभाग की टीम द्वारा बोर खनन को प्रतिबंधित कर बोर वाहन को जब्त किया गया।

एसडीएम पलारी दीपक निकुंज ने बताया कि रविवार को ग्राम दतरंगी निवासी किसान पंचुराम निषाद के द्वारा अपने खेत में बिना अनुमति के बोर खनन कराया जा रहा था। सूचना पर राजस्व विभाग की टीम ने मौके पर पहुंचकर बोर खनन संबंधी दास्तावेज की मांग वाहन चालक धर्मेन्द्र ठाकुर से की गई जिस पर अनुमति संबंधी कोई दास्तावे पेश नहीं करने पर बोर खनन प्रतिबंधित किया गया और पंचनामा तैयार कर बोर वाहन क्रमांक च 01 खब्ब6945 को जब्त किया गया। जब्त वाहन



को थाना प्रभारी गिधपुरी के सुपुर्द किया गया।

गौरतलब है कि कलेक्टर दीपक सोनी के द्वारा जिले को आगामी 30 जून 2025 तक जलाभास प्रस्त क्षेत्र घोषित किया गया है। इस अवधि में बिना सक्षम अधिकारी के पूर्व अनुमति के नया बोर खनन प्रतिबंधित है। इस दौरान नाबब तहसीलदार चुयमन लाल ध्रुव सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे।

आपरेशन विश्वास यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले चालकों पर कार्रवाई



■ **तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता**

बलौदाबाजार, 28 अप्रैल। जिला बलौदाबाजार-भाटापारा यातायात पुलिस द्वारा आपरेशन विश्वास के तहत यातायात नियमों की अवहेलना करने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध लगातार सख्ती से कार्यवाही की जा रही हैं, साथ ही जिले में सड़क दुर्घटनाओ की रोकथाम, सुगम एवं सुव्यवस्थित यातायात व्यवस्था के लिए, यातायात नियमों का पालन नहीं करने वाले वाहन चालको पर सख्त कार्यवाही करने हेतु यातायात पुलिस द्वारा लगातार चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है।

इसी क्रम मे दिनांक 20.04.2025 को यातायात पुलिस द्वारा सड़क मार्ग में दो-पहिया वाहन में तीन सवार, चलने वाले चालकों पर सख्त कार्रवाई किया गया है। यातायात पुलिस द्वारा चेकिंग अभियान में दोपहिया वाहन में तीन सवारी चलने वाले 33 वाहन चालकों के विरुद्ध कार्रवाई कर 79900 समन शुल्क वसूला

गया है। इस वर्ष 2025 में दोपहिया वाहन में तीन सवारी बैठकर वाहन चलाने वाले कुल 3071 प्रकरण में 78, 94, 300 समन शुल्क वसूल किया गया है।

जिला बलौदाबाजार-भाटापारा यातायात पुलिस के प्रति जागरूकता एवं यातायात नियमो के पालन हेतु सख्ती से लगातार कार्यवाही की जा रही है। पुलिस आम नागरिकों से अपील करती हैं कि आप सभी यातायात के नियमों का पालन करें एवं जिले में सुगम एवं सुरक्षित यातायात व्यवस्था के लिए यातायात नियमों का सदैव पालन करें। पुलिस आपकी सेवा एवं सुरक्षा हेतु सदैव तत्पर हैं।

नमांतरण प्रकरण में उपस्थिति हेतु ईशतहार	
आदेश 05 नियम 01 एवं 05 व्यवहार प्रक्रिया संहिता। राजस्व अ.प्र.क्र. 202306092200028/0921/ अपील-अ-6 वर्ष 2023-24 में उपस्थित हेतु श्रवण तिथि- प्रसेस नंबर: 14/05/2025 सक्षम :- न्यायालय श्रीमान अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) महोदय डोंगरगढ़ जिला राजनांदगांव सुनन्या सहायक पति श्री इन्दर लाल सहारे जाति कलार निवासी छिन्डीजोब तहसील डोंगरगढ़ जिला राजनांदगांव आवेदक //चिन्टुद// 01. कन्हैया दास आ. श्री बुधराम मृत निवासी छिन्डीजोब तहसील डोंगरगढ़ जिला राजनांदगांव आवेदक आवेदक सुनन्या सहारे पति श्री इन्दर लाल सहारे पति श्री इन्दर लाल सहारे जिला निवासी छिन्डीजोब तहसील डोंगरगढ़ जिला राजनांदगांव द्वारा ग्राम छिन्डीजोब प.ह.नं. 27 स्थित भूमि खसरा नंबर 28/1 रकबा 0.23 एकड़ भूमि स्थित है। अपीलाय के पति स्व. इन्दर लाल सहारे ने दिनांक 11/06/1993 में विक्रेता कन्हैया व बुधराम निवासी छिन्डीजोब से खरीदी गई थी, जिसका विधिपत्र प्रमाणिकरण की कलवाया गया, अपीलार्थी की उक्त संपत्ति को कन्हैया वन्द बुधराम निवासी छिन्डीजोब से खरीदी गई थी उक्त संपत्ति में अपीलार्थी के पति इन्दर लाल के नाम पर दर्ज होना था किन्तु उक्त भूमि विक्रेता कन्हैया पति बुधराम के नाम पर दर्ज है जो कि गृहित है। अपीलार्थी द्वारा ग्राम छिन्डीजोब स्थित भूमि खसरा नंबर 28/1, रकबा 0.23 एकड़ भूमि को अपीलार्थी का नाम दर्ज किये जाने का निवेदन किया है। उक्त अपील प्रकरण में आप कन्हैया दास पति बुधराम ग्राम छिन्डीजोब को इस न्यायालय में पेशी दिनांक 28/04/2025 को प्राप्त: 11:00 बजे अपील प्रकरण का उत्तर देने के लिए समन दिया जाता है, आप इस न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे प्लीडर द्वारा हाजिर हो सकते है जिन्हें मय्यक अनुदेश दिये गये हो और इस हद से संबंधित श्रवण तथ्यों का उत्तर दे सकें, या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति हो जो ऐसे स्व प्रश्नों का उत्तर दे सकें, आपको यह भी निर्देश दिया जाता है कि आप उस दिन सभी दस्तावेजों को पेश करें जिस पर आपको प्रतिका या प्रतिदान आधारित है। आपको सूचित किया जाता है कि आप अथवा आपको इस से आपका प्लीडर या बतवाई गई ताखि को इस न्यायालय में हाजिर नहीं होने तो नामांतरण प्रकरण की सुनवाई और उसका अवरुधण आपकी अनुपस्थिति में किया जावेगा, यदि किसी कारण वश उक्त पेशी ताखि को सर्वजनिक अकाशघोषित किया जाता है या यदि किसी कारण वश कार्य स्थगित किया जाता है तो आपले कार्यादेश पर प्रकरण की सुनवाई की जावेगी। अनुविभागीय अधिकारी (रा.) डोंगरगढ़	



श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़



कृषक उन्नति योजना

- ▶ 13 लाख किसानों को ₹3,716 करोड़ बकाया बोनस राशि वितरित
- ▶ देश में सर्वाधिक ₹3,100 प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी



मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय से
जुड़ने के लिए Q.R. Code
स्केन करें

सुशासन से समृद्धि की ओर